

वर्ण—माला ।

हर वर्ण ।

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

व्यञ्जन वर्ण ।

क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ
ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न
प फ ब भ म	य र ल व
श ष स ह	क्षत्रज्ञणष्टः

१ ऋ लृ ऌ ड पा णिदी भाषा में काम नह पड़ता है।

२ ओ ओ ऐसे मो ढखे जाते हैं ।

३ क ख ग घ ङ ट ठ ड ढ फ के नीचे एक चिह्न डालते हैं वा

कमसे इतना उच्चारण करता है कि उका सा होना द ।

(२)

परिचानने के लिये आगे पीछे लिखे

इए अक्षर ।

अ ट ओ ह च ए छ द फ ग ङ
ज ठ उ क र य प ज ङ ङ उ
स स् म व व इ ख ल त आ श
ध घ अ म ए ढ य अ ण
क्ष त्र क्ष इ न क ग सं
ज ङ ङ ङ ङ ण ए ।

स्वर—मात्रा ।

आ- । । इ- । । ई- । । उ- । ।
ऊ- । । ऋ- । । ए- । । ऐ- । ।
ओ- । । औ- । । अं- । ।

अ*

क्+अ क।म्+अ=म

जल रथ डर कर अव
 फलमन घर चल जब
 तन नगर जगत लवण
 रमल कमल मरण सकल
 डर मत । रथ पर चढ़।
 घर चल छल मत कर।
 अव पढ़ । जब तक।
 पकड़ कर । कमल सर ।

• वास्तव में ६८ अंतो १। स्वरूप क् ख् ग् आदि हैं, परन्तु बिना किसी स्वर की सहायता के उनका उच्चारण नहीं हो सकता, इस लिये उन में अ मिलाकर लिखते हैं जैसे कि प्रथम पृष्ठ पर क ख ग घ आदि लिखे हैं।

आ = ।

इ + आ = रा । ज्ञ + आ = जा ।

राजा वाजा आग काला पाठ
दाता माता राग माला साज
सावन चावल तालाव आदर
चादर सारस बालक लालच
बादल सावन ।

अब जा । आन गा । पाठ याद कर । माता
का आदर कर । राजा का मान कर । दाता
का दान । चारल उबार । लालच न कर ।
बादल आया । सारन पटा ला । सातर कर ।

इ = णि ।

इ-इ णि । म-इ = मि ।

दिन गिन पिता किरण गिरना
सिर लिख सिख हरिण फिरना

दिन निकल आया । पिता का कहा मान ।

वह क्रिष्ण का शलक था । गिरना मत ।

गिन कर जा । माता का नाम बता ।

हरिण परूढ़ ला ।

ई=ी

गू+ई=गी । तू+ई=ती ।

गीत खीर दही दीपक विजली

शीत तार पानी पतिल नगीना

गीत गा । दही थिठा । पानी पी । दही की

मलाई खा । विजली चमकी । दीपक जला ।

पतिल का वासन ला । तार सीधा चला ।

शीत पड़ा था ।

(८)

माता पिता की सेवा का । सुत का पानी
चमेला खिला । अकेला मत फिर ।
पट्टा मत खेल । रात पढ़ गई ।
मेवा मीठा था । रात भर सेवा कर ।

ऐ=

बू+ए=बै । मू+ऐ=मै ।

बैल कैसा चैन मैना

पैर मेल नैन जैसा वैसा

हिस्ती से बैर मत कर । चैन में बैठ जा ।
मैले कपड़े मत पहिन । यह पृढ़ा बैल है ।
पैसा २ मत निकाल । मैना टड़ गई ।

जंघा काव बैसा दाम ।

नदी करनी बनी मग्नी ।

ओ=

गू+ओ=गो मू+ओ=मो



देखो तालाब में कैसे सुहावने कमल खिल
 दे हैं और मंद मंद पवन के झकोले खा
 रहे हैं ।

कैसा सुहाना समय है । काली घटा छा रही
 । वर्षा हो रही है । दरी दरी जल पर कीयल
 खिल रही है और भाँति भाँति के फल कैसे मनोर
 म दिखा रहे हैं ।

हो
 । ति
 हो । हो बालकों से खेलना न पारिदे । अपने
 जूँ-पैरों में से ध्यान लो कि बौन मला, और
 मला नीन हरा है । हरो का संग छोड़ के मलों से
 । बोलें जुग हरो ।

— हो बालकों ! मदा मला बान हरो, शिख से
 । तुमही बहाई हरो । जग विशा और दुर के
 । हो पर पलने से रही बहाई मिले । उन सब बहा
 दा बानो ।

४+५=९ । पृथ्वी मोल है ।

h2

५+५=१०। गद्दी। राजा गद्दी पर बैठा शासन करता है।

६+४=१० । शुद्ध । जशर शुद्ध लिखो, जशुद्ध क्यों लिखते हो ।

६+५=११। पच। उसके पैर में पच की रेखा है।

दु+य=द्य । विद्या । मन देकर विद्या पदो ।

५+५= १० । महुद्र । महुद्र का डल खारो होवा है,
पिया नहीं जावा ।

४+४=८ । १५ '४' १५ ४ मर करे।

4

६+२=८

१७७७ १८०० १८२३ १८४६ १८६९

न

न+त=न्त । मन्त । यह वडा सन्त है ।

न+व=न्व । मन्वा । अपनी सन्वा सुने सुनाओ ।

न+र=न्द । आनन्द । भग करने में आनन्द होता

है ।

न+घ=न्व । गुणन्व । इन गुणमें बढ़ी गुणन्व है ।

न+न=न । अन्न । भूते को अन्न दो पुन्न होगा ।

न+प=न्प । कन्पा । यह अभी तरु कंवारी कन्पा है ।

न+र=न्द । निन्द । इस मान के माये पर काना

निन्द है ।

व

व+उ=व । वृत्ति । मेरी वृत्ति इनमें में होगी ।

व+द=व । वृत्तग । वृत्ता वृत्तग है, वृत्त वृत्तगो ।

व+व=व । वृत्त । वृत्त वृत्त वृत्त है ।

व+व=व । वृत्त । वृत्त वृत्त है, इस वृत्ति वृत्तग

है ।

रू

रु+रन्ध्र । रुध्र । रुध्रों का रुद्र उद्धारण करो ।
 रु+रन्ध्रा । रुध्रा । रुद्र राभी दांत का रुध्रा
 परम मनोर है ।

रु+रन्ध्र । रुध्रा । मेरे भाई का रुध्रा है ।

भू

भू+भृन्ध्र । भृन्ध्र । भृन्ध्रिष्ठ धृन्ध्रिष्ठ भृन्ध्रिष्ठ भृन्ध्रिष्ठ ।

भू

भू+भृन्ध्र । भृन्ध्र । भृन्ध्रिष्ठ धृन्ध्रिष्ठ भृन्ध्रिष्ठ भृन्ध्रिष्ठ
 भृन्ध्रिष्ठ ।

भू+भृन्ध्र । भृन्ध्र । भृन्ध्रिष्ठ धृन्ध्रिष्ठ भृन्ध्रिष्ठ भृन्ध्रिष्ठ
 भृन्ध्रिष्ठ ।

भू+भृन्ध्र । भृन्ध्र । भृन्ध्रिष्ठ धृन्ध्रिष्ठ भृन्ध्रिष्ठ भृन्ध्रिष्ठ
 भृन्ध्रिष्ठ ।

भू+भृन्ध्र । भृन्ध्र । भृन्ध्रिष्ठ धृन्ध्रिष्ठ भृन्ध्रिष्ठ भृन्ध्रिष्ठ
 भृन्ध्रिष्ठ ।

मृ+म=मम । निकम्मा । हीरा निकम्मा बैठा है ।

मृ+र=मर । नम्रता । सब के साथ नम्रता से बोल

मृ+र=मर । कुम्हार । कुम्हार बासन बनाता ।
मोग मोल ले जाते हैं ।

२

दृ+त्र=दृत्र । दूँधन । दूँधन की संगत दुरी ।
पत्र करो ।

दृ+व=दृव । निर्धन । निर्धन जो दान देने
मुझदाग दी घटा होगा ।

दृ+व=दृव । वरं । दूँधन ठीक दूँधन

दृ+व=दृव । निर्धन । निर्धन को पत्र भगाया

दृ+व=दृव । निर्धन । निर्धन को पत्र भगाया ।
दृ+व=दृव । निर्धन । निर्धन को पत्र भगाया ।

शू

शू+ष=शच । निश्चय । बिना निश्चय किये कोई वा
हृन् से मत निकालो ।

शू+न=शन्न । प्रश्न । तुम्हारा प्रश्न क्या है, मैंने नई
समझा ।

शू+र=श्रध । परिधम । बिधा बड़े परिधम से आर्त
है ।

शू+य=शय । ईश्वर । सारे संसार का रखने वाला
ईश्वर है, जिस को भगवान् भी कहते हैं

श

श+ट=श्ट । कष्ट । बिधा बड़े कष्ट में आती है, पान्
इय का कल बड़ा उपम है ।

श+ट=श्ट । कष्ट । पान् बड़ा घेष्ट बाजक है ।

श+य=शय । शय । वह पुण्यो की बाटो से तुम्हारे
हिय हावा है ।

प्+प=प्य । मनुप्य । भले मनुप्य से सब प्रेम
करते हैं ।

स्

स्+व=स्व । पुस्तक । पुस्तक मैली मत करो, यह
शुरी पाठ है ।

स्+ध=स्थ । स्थान । अपने रहने के स्थान को
शुद्ध रखो, इस से जी प्रसन्न रहता है ।

स्+न=ख । खेद । सब से खेद करो जिस से वह भी
तुम से खेद को ।

स्+न स्म स्मय्य अपना बात स्मरण करो ।

स्+व-स्व स्वाद् स्वांस् स्वात स्वाद् है । सब ने
कहाँ

१—माता पिता की आज्ञा के विरुद्ध कोई कार्य मत करो । माता मणिनी सब के साथ जेद से रहो । पदोक्षियों को अपना बन्धु समझो । अपने देश वासियों से निरन्तर जेद बढ़ाते रहो ।

२—बाद समस्या में तुम को किसी बात की चिन्ता नहीं । इस लिये मन लगाकर विद्याभ्यास करो ।

३—अब पाठशाला में जाओ, गुरुओं को प्रणाम कर शुभ्रक सोल पाठ स्मरण करो । अन्य बातों के साथ हुआ समय मत गंवाओ, समय का हुआ खोना पाप है ।

४—यदि तुम किसी की निन्दा न करोगे और सब से नीट रहन चालोगे, तो कोई तुम्हारा बदचिन्त बन्धु न होगा और सब दिव्य रहेंगे, इस से तुम्हारे सब कार्य विरह रहेंगे ।

और परलोक में उत्तम गति प्राप्त होगी।
 । युवा अवस्था में यही कर्म करने उचित
 , जिन से बुढ़ापे में सुख हो, और आयु
 र बढ़ काम करने उचित हैं, जिन से परलोक
 धरे।

४थ पाठ ।

मले बालक सची कोमल प्यारी और सब
 से हितकारी बात कहते हैं । झूठी कड़ी और
 हरी बात कभी नहीं कहते । अपने मुँह से अपना
 त्रुति, और पराई निन्दा नहीं करते । जो बालक
 अपने मन में कुछ और रखते हैं और बाहर से
 कुछ और कहते हैं, वह अच्छे नहीं, वह भी एक
 प्रकार के चोर हैं।

५म पाठ ।

कृतम न रनो, कृतम होना नहु । रग
 । जो बालक किसी के किये हुए उपाकार को

भूल बैठते हैं, लोग उन्हें कुतम कहते हैं । कुतम का इस लोक में यश नहीं और परलोक में भी मला नहीं, इस लिये तुम्हें उचित है कि किसी के उरकार को कभी न भूलो, कुतम बने रहो, जिस से यहां यश और परलोक में सुगति हो ।

दठा पाठ ।

हे बालक ! शुद्धिमान् की संगति से ज्ञान और मान मिलता है । जो बालक आपस में लड़ते मगरने माली देते और दगा करते हैं, वे तुम्हारे भी संग हैं । मित्र दुःख का नश्य पहचाना जाता है । मित्र का धान पानन अच्छा है, उन के मित्र बहुत है । जो बालक मित्र व अदलान नश्य उपदेश को नष्ट कर दे । किसी है निन्दा मत करो ।

७म पाठ ।

मूर्ख की यह रङ्गी पहचान है कि वह बिना पूछे बोल उठता है । दुष्ट लोगों के पास बैठने से अकेले बैठ रहना अच्छा है । स्नान करने से शरीर शुद्ध होता है । माता पिता को अपने सिर पर छत्र समझो, क्योंकि उन के होने से अब तुम निश्चिन्त हो । यदि कोई पुरुष तुम्हारे यहाँ पाहुना आवे उस का उत्तम रीति से सत्कार करो । अपनी जिह्वा को सब समय अपने वक्त्र में रखो । बालकों को चाहिये कि बहुत परिश्रम कर के विद्या सीखें, जिस से सब स्थान पर मान पावे ।

८वां पाठ ।

उपदेश ।

१—पराई सभा में विचार कर बात कही नहीं ठां हृद्य बंद रखो । ऐसा न हो कि लोभ

तुम्हें यह कहने कम शायं-सुंदर छोटा बात बंदी ।

२—पराए द्रव्य का लोभ मत करो, धोरी और गाली देना छोड़ दो । मनुष्य में ये अवगुण कभी न होने चाहिये ।

३—परमेश्वर से डरो, और उसकी स्तुति करो और उसका प्रेम हृदय में धरो, क्योंकि परमेश्वर का घर सुर सत्माधि का घर है, उस की प्रीति सब दुःखों के मिटाने वाली है ।

९वां पाठ ।

लोभ करना हो तो विशेष करके विषा खा करो । अपनी प्रतिष्ठा प्यारी है तो किसी को दुःख न करो । मूर्खता धारण के लिये मनुष्य न होना । क्योंकि यदि मनुष्य विना पत नहीं चिन्त की प्राप्ति करे तो विना मनुष्य विना न सदा ।

सब से प्यारी वस्तु हूँ तो ईश्वर है । इस से बढ़ कर और क्या प्यारा हो सकता है । यदि उच्चम से उच्चम संगी चाहो तो धन है ।

बहुत सोना बहुत व्यर्थ किरना चपल बालकों का काम है । अपनी बड़ाई और पराई निन्दा त्यागो, जिस से अगत में मान पावो ।

१०वां पाठ।

उच्चम उपदेश ।

एक बालक अचेत लेटा पड़ा था, दो पक्षी आपस में लड़ते २ उसकी छाती पर आन गिरे, उन दोनों में से एक उस के हाथ आ गया और दूसरा उड़ गया । उड़ गए को देख उन पकड़े गए पक्षी ने कहा ' बालक ! तू मरे पक्षी पर प्रेम कर

के लिये छोड़ दो, मेरे पक्षे पीछे तो रहे होंगे ।
 बालक ने उस की बात पर कुछ प्यान न दिया ।
 तब पक्षी बोला—मैं तुम्हें चार अमोलक दाते
 बठाता हूँ, जो मेरे टूके भर मांस से कई गुणा
 अधिक तुम्हें लाभकारी होंगी ।

१म—राध आई बहुत ही कभी न छोड़ना ।

२म—ओ राधे ममता में न आवे उन पर
 विश्वास न दाए लेना ।

३—धीरे धीरे बात पर नहीं रहना । हमने
 कहा—धीरे बात ! धीरे बोला, तुम्हें छोड़ो तो
 धीरे बात रहना । बालक छोड़ कर बोला—अर तो
 क्या । धीरे बोला तुम्हें नहीं रहना मू अति दुर्ग
 है वे । धीरे बात पर न रहना धीरे बात है

बर्बने में काया, मैंने जो करा था, हाथ
को नहीं छोड़ना, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया।

११वां पाठ

शिवा ।

होम निरादर की कुञ्जी है । अपने
की रक्षा कर । सुनने और देखने में बड़ा ये
मनुष्य कामों से पहिचाना जाता है । उधार भी
बेगादता है । अगल में कोई मनुष्य पूर्ण
नहीं । निर्धन पण्डित मूर्ख धनी से अग
मूर्ख मित्र से शुद्धिमान शत्रु अच्छा है । योका
बहुत रोगों से बचाता है । मला बढ़ है, त्रि
होमों को लाभ पहुँचे । जो किसी को ईसता
सब ईसते हैं, जो दूसरों के दोष सुनाता है ब
होती है । जो परमेश्वर ने हम को दिया है हम
को दो । अपनी बड़ाई अपने मुँह में न क

हस्रो के मुख से अपनी बर्दाह सुन कर प्रसन्न
भी न हो ।

अर्थक शब्दों का पाठ ।

मैं तो हार परोते २ हार गई । कुचे को देख
हरन हरन हो गए । चील पर चील बैठी बोलती है ।
समाधि पर समाधि क्यों लगा बैठे हो । मलमल
के वस्त्र से मल मल के मैल निकाल टाठ । इध का
घुंटा पिला कर अब गला तो न घुंटा । इस तार ने
अंगरेजों को तार ही दिया । घड़ी को घड़ी में
एक घड़ी भर रख छोड़ ।

दोहा ।

खोना देने पिय गए, सुना कर गए देश ।

सेनि मिठा न पिय किये, रूपा हो गए देश ॥

कल पर रखना ।

द्विधा ।

१—जिसी माता ने पुत्र को कहा बेटा नाम

का द्वार बंद कर आओ' । उचर दिया 'मां जी, पोंका ठहर के बंद कर लेता हूं' । इतना करते २ सोमया । जब उठ कर द्वार बंद करने गया, तो देखा कि शूकों ने सब पौंदे नष्ट कर दिये थे ।

२—दूसरे दिन मां ने कहा 'पुत्र पाठ मली मांति स्मरण रम, कठ को पगीला होने वाली है, ओ विद्यार्थी अच्छा मुनायेंगे, उनको अवार्तिविक मिठेगा' । उचर दिया—'कनकीरा उड़ा कर स्मरण करूंगा' । जब खेल्कर पाठ पढ़ करने लगा, सोच हो गई सोचो सोचने ही नींद आ गई, सोते सोते दिन चढ़ गया, जब गुनाने लगा, तो झूट भी स्मरण नहीं था, अवार्तिविक म बचिन रह गया ।

स्त्री-शिक्षा ।

स्त्रियों को भी पुरुषों की भांति विद्या सीखना उचित है । हिंदू धर्म के अनुसार स्त्री पुरुष धर्म कर्म में एक समझे गए हैं, और धर्म कर्म की परीक्षा बिना शिक्षा के नहीं होती । इस लिये स्त्रियों अथवा कन्याओं को उचित है कि वे अवश्य विद्या पढ़ें, और उस के द्वारा अपने धर्म कर्म, जिन से लोक सुधरे अवश्य मन देकर सीखें ।

हिंदी ।

हे पाठको, तुम जानते हो कि इस देश का नाम भारत अथवा हिंदुस्तान है, इसी से इस देश की भाषा को हिंदी भाषा कहते हैं ।

यह भाषा कई प्रकार की है । जैसे बंगाल की बंगाली हिंदी, गुजरात की गुजराती हिंदी, महा-

संख्या वाचक शब्दों के नाम और स्वरूप।

१ एक	१५ पन्द्रा
२ दो	१६ सोलह
३ तीन	१७ सत्रह
४ चार	१८ अठारह
५ पाँच	१९ उन्नीस
६ छः	२० बीस
७ सात	२१ इक्कीस
८ आठ	२२ बार्स
९ नौ	२३ तेरस
१० दस	२४ चौबीस
११ ग्यारह	२५ पचास
१२ बारह	२६ छन्नीस
१३ तेरह	२७ ठम्पारस
१४ चौदह	२८ बहारास

३९ ठन्तीस	४७ सैंतालीस
३० तीस	४८ अढ़तालीस
३१ इकतीस	४९ उनचास
३२ बचीस	५० पचास
३३ सेतीस	५१ इक्यावन (इकधंजा)
३४ चौतीस	५२ बावन (बधंजा)
३५ पैंतीस	५३ त्रेपन (त्रधंजा)
३६ छत्तीस	५४ चव्वन (चौधंजा)
३७ सैंतीस	५५ पचपन (पचधंजा)
३८ अढ़तीस	५६ छप्पन (छधंजा)
३९ ठन्तालीस	५७ सतावन (सतधंजा)
४० चालीस	५८ अट्ठावन (अटधंजा)
४१ इकतालीस	५९ उनासठ
४२ बिया (बिठा) लीस	६० साठ
४३ तिया (तिठा) लीस	६१ इकसठ
४४ चरा (चौता) लीस	६२ बासठ
४५ पैंतानीस	६३ त्रेसठ
४६ छिया (छिठा) लीस	६४ चौसठ

६५ पैसठ	८३ त्रियासी
६६ छियामठ	८४ चौरासी
६७ सड़सठ	८५ पचासी
६८ अड़सठ	८६ छियासी
६९ उन्हचर	८७ सतासी
७० सचर	८८ अठासी
७१ इकइचर	८९ उनानवे (नवासी)
७२ बहचर	९० नव्वे
७३ तिहचर	९१ इक्यानवे
७४ चौहचर	९२ बानवे
७५ पचहचर	९३ त्रानवे
७६ छिहचर	९४ चौरानवे
७७ सतचर	९५ पचानवे
७८ अठचर	९६ छियानवे
७९ उनासी	९७ सतानवे
८० अस्सी	९८ अठानवे
८१ इक्यासी	९९ निन्यानवे
८२ बयासी	१०० सौ

Printed at the M. J. & A. Press, Limited
By L. Mott Esq. Manager.



श्रीबीतरागायनमः ।

जैन वालोपदेश ।

कैमस्तुति ९० गानपद्मजी महाराज हुन

कैम-वालोपदेश के रचय



सहायक -

माला नौगनागन विद्वानामलजी

महा बन्धु (विद्वान्म एविलारा)



विद्वान्म १९११-१९१२

सद्वर्णन १९११

पञ्चकण्ठस्य विविक्तस्य वक्षस्य चारुं मे मुद्रितम् ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

❀ वर्णा-माला ❀

❀ स्वर ❀

स	ल	व	श्र
रे	ऊ	आ	
		इ	
		ऋ	
		ॠ	
		ओ	
		औ	

समुद्रमंथन त्रिपिण्ड दत्तं धाम्नि मे मुनिनः ।

त थ द ध न
 प फ ब भ म
 य र ल व
 श ष स ह

व्यंजनों की पहचान ।

श ल ग ह छ ज ठ ट ढ
 ड स व व ज झ ङ क प
 भ म श झ य ज स न

नोट-कोई कोई च अ झ को भी व्यञ्जन कहने में परहेज।
 दो अक्षरों के मिलने से पद है इसलिये यह मिले हुए अक्षरों
 के साथ लिखे जायेंगे ।

* य का दूसरा रूप 'रि' ऐसा भी होता है ।



ऊपर लिखे अक्षरों में से दो अक्षरों का जोड़

म। फ + ल = फल

अ + व = अव

झ। क + घ = कघ

न + द = नद

ध। द - स = दस

क + र = कर

र ध - र = धर

न - र = नर

ह - म = हम

म - त = मत

आ + ग = आग

म - व = मव

ग - म = गम

न + ग + र = नगर

र - ह - र = गुरुर

ह - र = नहर

द - क = रुद्रक

ह + न = घन

व - ज = वज्र

र + य = रय

उ + स = उस

ई + त्व = ईत्त्व

उ + त = उत्त

ए - क = एक

ऐ + व = ऐव

ओ + स = ओस

औ + र = और

अं - ग = अंग

ख + ल = खल

ह + ल = हल

च + ल = चल

व - ह = वह

तीन अक्षरों का जोड़ ।

ग + म + न = गमन

ग - र - न = गरन

व - ल - न = वलन

ल - ग - न = लगन

म - ह - ल = महल

म - ग - र = मगर

वाराक्षरी ।

स्वर चिन्हों के संयोग से व्यञ्जनों के बने हुये रूप ।
 क का कि की कु कू के के को कौ कं कः
 ख खा खि खी खु खू खे खै खो खौ खं खः
 ग गा गि गी गु गू गे गै गो गौ गं गः
 घ घा घि घी घु घू घे घै घो घौ घं घः
 ङ ङा ङि ङी ङु ङू ङे ङै ङो ङौ ङं ङः
 च चा चि ची चु चू चे चै चो चौ चं चः
 छ छा छि छी छु छू छे छै छो छौ छं छः
 ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ जं जः
 झ झा झि झी झु झू झे झै जो झौ झं झः
 ञ ञा ञि ञी ञु ञू ञे ञै ञो ञौ ञं ञः
 ट टा टि टी टु टू टे टे टो टौ टं टः
 ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठे ठै ठो ठौ ठं ठः
 ड डा डि डी डु डू डे डै डो डौ डं डः

व्यञ्जन + माप स्वर का चिन्ह जो लगाने से क-ख=क, ग-ग=ग, घ-घ=घ, यह बहुत प्रसिद्ध न होना म नही दिया गया ।

ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ लं लः
 व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः
 श शा शि शी शु श्रु शे शे शो शौ शं शः
 प पा पि पी पु पृ पे पै पो पौ पं पः
 त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ तं तः
 ह हा हि ही हु ह्रु हे है हो हौ हं हः

स्वर चिन्ह सहित व्यंजनों का शब्दों में प्रयोग ।

ल + व = ली = बाली	वी = वी + दा + र = वांसीदार
शो + वि = या = मोनिया	दो = द + गी = दोकरी
श + दा + र = बादाय	शु + प + र + दे + र = शुपभदेव
ही = भी = जैनी	अ + र + हं + र = अरहं
हा = हो + र = लारी	वु = व + उर
ती = त + र = तीर	वै = व + ऐ
हं = ह + र = हर	ह = ह + र = हर
प + र + वी + र = पारव	व = व + उ = वु
व + र + वै + र = वरवै	व = व + य = वय
हं = ह + र = हर	

अभ्यास ।

सेवक किंकर चाकर नोकर केवल आराम
 वियोग जननी मुनि शरीर अपनी बहूत
 मेरुट देहली आगरा मूरत परमानंद
 भगवान शांतिनाथ विमलनाथ सुमतिनाथ
 अजितनाथ कंगाल गिलोना हंसी घेगगी
 गोम्व धंधा भागत भूट पढ़ना मीठा दूध

 छोट छोट बारग ।

किमी जीव को मत मारो । दया भाव रखो ।
 गुरु की सेवा करो । जो पुरुष गुरु की सेवा
 करने हैं उनको संसार में यही मुख्य मिश्रण
 है । हमेशा सच बोलो । छूट कर्मी मत कहो ।
 किसी जीव को दुःख देना पाप है । अपना
 पाप हर रोज़ याद किया करो । आज का
 काम कल पर मत छोड़ो । किसी से धोका

यहाँ करना चाहिये । अपने से बड़ों का मान
 करो । दुखी पुरुषों की सहायता करो । भले
 कामों का भला और बुरे कामों का बुरा फल
 होता है । बालको ! पाठशाला में ठीक समय
 पर जाया करो । साथियों के साथ लड़ना
 भगड़ना नहीं चाहिये ।

पड़ोसियों से मेल रग्वो । सबको अपने भाई
 बंधु के बराबर समझो । किसी को मत
 सताओ । सब की आप जैसी जान है ।
 सब से भलाई करें । बालको ! अपने माना

पाई वाले जैसे:—

प म ज व च स

बिना पाई वाले जैसे:—

द क ट ठ ड ढ

जब बिना पाई वाले अक्षर अगले उ से मिलते हैं तब उनकी पहली सूरत कुछ बनी रहती है । जैसे:—

$\text{ट} + \text{ठ} = \text{ट्ठ}$

$\text{ड} + \text{ड} = \text{ड्ड}$

$\text{ढ} + \text{क} = \text{ङ्क}$

$\text{द} + \text{द} = \text{दद}$

जब बिना पाई वाले अक्षर 'य' से मिलते हैं तब 'य' की मूल 'य' बन जाती है । जैसे:—

$\text{द} + \text{य} = \text{द्य}$

$\text{क} + \text{य} = \text{क्य}$

$\text{ठ} + \text{य} = \text{ठ्य}$

ल् + य = ल्य—कल्याण	गृ - ध = गृध—दुग्ध
र् + थ = र्थ—भाषार्थ	गृ - न = नृ—अग्नि
न् + क = रक्त—संस्कार	च् + च = च—सञ्चा
प् + ण = ण कृष्ण	ज् - ज = ज्ञ—जला
ञ् + च = ञ—पञ्चाळ	ज् - व = ज्व—ज्वर
न् + थ = म्य—यम्यई	द् + द = दृढ—बुद्धा
र-द-ध = र + द = र्द—वर्द्धमान	त् + क = क्त—सत्कार
न् + व = श्व—पाश्विनाथ	द् - व = दृ—द्वेष
न् + ल = लृ—मल्लिनाथ	न् + न = न्न—अन्न
न् - थ = न्य—कुम्भुनाथ	न् + य = न्य—कन्या
न + न = न्न—शान्ति नाथ	न - द = नृ—चिन्द
प . प = प्य—पुष्पदन्त	प + त = त—नृमि
द + य = द्य—पद्म प्रभु	प + य = य—प्यान
द + थ = द्थ—विशादथ	म + न = न्न—निन्न
म + व = म्व—मन्मथी	म + र = र—माथ्रम
र + र = र—रजा	र + र = र—रम
र + य = र्य—अभ्यासक	र + र = र—रम
र + र = र—रक्त	र + र = र—रम
व + य = व्य—व्याधि	र + र = र—रम
र + ल = र—रक्ष	र + र = र—रम

अहिंसा ।

बाछको ! किसी भी जीव को तुम मत मारो किसी को दुःख मत दो ऐसा करना बड़ा पाप है । जब तुम किसी पुरुष को गाय घोड़ा कुत्ता माँव बिच्छू आदि को मारोगे तो वह भी तुम को मारने दौढ़ेगा और तुम्हें दुःख देगा । इस लिये अगर तुम किसी में शास्त्रानुसार नहीं चाहते तो तुम भी उनको मत मारो । जान सब में एक ही होती है जमीन पर चलने किये लगे छोटे अंतुओं की बड़ी बका राखा करो । उनके शरीरों का हाथ के नीचे मत समझो क्योंकि वेम जानने से वे परजाने हैं । भला, करो, अगर तुम के हाथी भजने शायी के नीचे समझ दाले तो तुम के कितना दुःख होगा इसी तरह तुम भी किसी को जमीन आदि पर मत समझो जैसे तुम हाथी के शायी के नीचे दब कर दुःख जाना नहीं चाहते इसी तरह जमीन पर चलने किये जीव भी तुम्हारे हाथ शायी के नीचे आकर कष्ट उठाना नहीं चाहते । सब को अपने जैसे समझो । सब पर दया करो । सब में प्रेम करो ।

झूठ बोलना ।

झूठ बोलने वाले का सब जगह अनादर होता है ।
 ग़या आदमी कभी सच भी बोलता है तो उस के
 सब को भी लोग झूठ ही समझते हैं । रात दिन उस
 को यही सोच लगा रहता है कि कहीं मेरा झूठ खुल
 न जाय फिर उस को झूठ छिपाने के लिये बहुत सी
 और झूठी बातें बनानी पड़ती हैं । झूठे की सब जगह
 निन्दा होती है । इस से बचने के लिये झूठ कभी न
 बोलना चाहिये जो तुम सच बोलोगे तो सब के प्यार
 बने रहोगे और सब लोग तुम्हारा विश्वास करेंगे । सच
 बोलने से तुम जगत में बड़ाई पाओगे, इस लिये, बड़को
 तुम को चाहिये कि सदा सच बोलो और झूठ का नाम
 भी न लो । झूठ का संग भी मत करो झूठ बोलना
 बहुत ही बुरा है इस का बड़ा ख़ांटा फल मिलता है ॥

एक समय की बात है कि जगह में चलने चलते
 किसी जूट के पाओ में कांटा घुस गया । और न चल
 सकने के कारण वह पृथ्वी पर हाँकें गया । कुछ
 समय के पीछे उम्मी रास्ते में एक बानर आ निकला

ऊँट ने उस बानर से कहा, कि हे भाई बानर ! पाओं में काँटा चुस गया है यदि तुम निकाछ दो तो बड़ा उपकार होगा । बानर ने उत्तर दिया कि हे मित्र ! काँटा तो मैं निकाछ सकता हूँ किन्तु तू मुझे क्या इनाम देगा । इस पर ऊँट ने फिर कहा कि, भाई ! मेरे पास इस समय कोई ऐसी वस्तु नहीं है, इस लिये तुझे क्या दूँ किन्तु तेरा उपकार अवश्य मानूँगा । बानर ने कहा कि अच्छा, यदि तू अपने पास का एक आम देना संजोकरे तो तेरा काँटा अभी निकाछ देना हूँ । बानर ने ऊँट को छापार हो कर मान लिया । और बानर ने आँधी जहाँ जहाँ में काँटा निकाछ रखा । काँटे के बाँट निकलने ही ऊँट छट छट कर मड़ा हो गया और वसन्त हो कर बानर में बँटता कि तू पास का आम छे छे किन्तु बानर ने उत्तर दिया कि मित्र ! इस समय पास की आवश्यकता नहीं है फिर कभी छेड़ेगा । बानर पीछे रिदा होकर उठ खड़ा हुआ और मार्ग का हो दिया । जाने जाने उस को एक गीत बोलता गया और उसमें उसको ही वे देवदर का छि मात्र बड़ा जान है जो तुम इनके वसन्त हो ।

वानर ने कहा कि, हे गीदड़! आज मैंने एक जंठ का कां-
 थ निकाला है जिस के इनाम में मैं उसके मांस का
 एक ग्रास लूंगा। तब गीदड़ बोला, अरे मूर्ख वानर!
 तुमने बहुत बुरा किया क्योंकि यदि वह पर जाता तो
 उसका सारा शरीर ही हमारे खाने में आता, अच्छा,
 चूंकि अभी तुने मांस लिया नहीं इस लिये जिह्वा का
 मांस मांगना-वानर बोला, मैंने जिह्वा का मांस तो
 उससे नहीं किया तब गीदड़ ने उत्तर दिया कि मैं
 तेरा साक्षि रहा ऐसे निश्चय करके दोनों ही जंठ के
 समीप आए। तब वानर ने जंठ से जिह्वा का मांस
 मांगा तब जंठ ने कहा, कि, हे भाई वानर! मैंने तेरे
 से जिह्वा का मांस तो नहीं किया अभी समय मृगाल
 (गीदड़) ऊंचे स्वर में कहने लगा, कि, हे महा
 शरीर धारी! जब तू दुर्बल था तब तू ने मेरे मांसने ही
 तो जिह्वा का मांस देने का कहा था अब तू दंड बरतता
 है। तब पर जंठ बैठ गया जिह्वा को मकाव कर मुख
 खोल दिया और वानर से बोला 'मांस लो' मनु
 वानर का मुख खुल आया तो वह हीन क कारण जंठ
 के मुख में प्रवेश न हो सका फिर गीदड़ कहने लगा

प्र०—त्याग किसे कहते हैं ?

उ०—दान करना, अभयदानादि का देना ।

प्र०—ब्रह्मचर्य का अर्थ क्या है ?

उ०—कुशल अनुष्ठान का सेवन करना और शास्त्र पढ़ना,
मैथुन से निवृत्ति करना ।

प्र०—इनका क्या फल है ?

उ०—संसार में मान और मोक्ष का सुख

प्र०—मोक्ष किसे कहते हैं ?

उ०—जहां पर कोई भी दुःख न हो

प्र०—मोक्ष आत्मायें सर्वज्ञ हैं किम्बा अल्पज्ञ ?

उ०—मोक्ष आत्मायें सर्वज्ञ और सर्वदर्शी हैं ।

प्र०—व्रताओ पुष्प कितने प्रकार के होते हैं ?

उ०—चार प्रकार के

प्र०—वे कौन २ से हैं ?

उ०—१ एक पुष्प सुंदर तो होते हैं किन्तु सुगंध से रहित होते हैं, २ एक सुगंध से भरे होते हैं अपितु रूप से वर्जित होते हैं, ३ एक सुगंध और सुंदरता से पूर्ण होते हैं, ४ एक सुगंध और सुंदरता दोनों से ही रहित होते हैं ।

प्र०—इन पुष्पों से क्या शिक्षा मिलनी है ?

प्र०- जो जीव स्वभाव से मद्र और विनयवान् दयालु तथा किसी दूसरे की ईर्ष्या न करने वाले हैं वे प्रायः परकर मनुष्य गति में जाते हैं उसे ही मनुष्य गति कहते हैं ।

प्र०-देवगति किसे कहते हैं ?

उ०-जो जीव अन्यन्त शुभ कर्म करने वाले हैं वे परकर देवता बन जाते हैं उसे ही देव गति कहते हैं ।

प्र०-जानि किसे कहते हैं ?

उ०-जिस में जीव का जन्म होवे और उस जन्म तक उसी जानि में रहे ।

प्र०-जानि कितनी है ?

उ०-पाँच ।

प्र०-वे कौन २ मी हैं ?

उ०-एकेन्द्रिय जानि १ द्वीन्द्रिय जानि २ त्रीन्द्रिय जानि ३ चतुरिन्द्रिय जानि ४ पंचेन्द्रिय जानि ५ ।

प्र०-एकेन्द्रिय जानि किसे कहते हैं ?

उ०-जिस प्राण के एक ही गर्भ इन्द्रिय हो जैसे-मिट्टी १ पानी २, अग्नि ३, वायु ४, वनस्पति ५ ।

प्र०-दो इन्द्रिय वाले प्राण कौन २ मी हैं ?

उ०-जिस प्राण के दो ही इन्द्रिय होवे जैसे-व्यर्थ और

प्र०-वे कौनसी हैं ?

उ०-पृथिवीकाय, अणुकाय, तेजोकाय, वायुकाय, स्पति काय और व्रसकाय ।

प्र०-इनका अर्थ क्या होता है ?

उ०-पृथिवीकाय (मिट्टी के जीव) अणुकाय [पानी के जीव] तेजोकाय [अग्नि के जीव] वायुकाय [वन हवा के जीव] वनस्पतिकाय [सपत्नी के जीव और व्रसकाय [दिखते चखते दो इन्द्रिय भाग के जीव ।]

प्र०-इन्द्रिय कितनी हैं ?

उ०-पाँच ।

प्र०-वे कौन २ हैं ?

उ०-ज्ञान, अग्नि, नायिका, शिखर, गवदा ।

प्र०-वर्षादि किसे कहते हैं ?

उ०-जो वस्तु सङ्गुण हो जाये ।

प्र०-वर्षादि किसे कहते हैं ?

उ०-उ (५) ।

प्र०-वे कौन २ हैं ?

४०—आहार पर्याप्त [पूरा आहार] शरीर पर्याप्त [संपूर्ण शरीर] इन्द्रिय पर्याप्त [संपूर्ण इन्द्रिय] आसोश्वास पर्याप्त [संपूर्ण आसोश्वास] भाषा पर्याप्त [संपूर्ण भाषा] मनो पर्याप्त [संपूर्ण मन] यही छै पर्याप्त गर्भ में ही जीव पूर्ण कर केता है ।

प्रश्नावली ।

- १—चारों गतियों के नाम बताओ ?
- २—दो कायों के नाम कहो ?
- ३—जाति किसे कहते हैं ?
- ४—पांचों इन्द्रियों के नाम बताओ ?
- ५—मक्खी में कौन २ सों इन्द्रिय हैं उनके नाम लो ?
- ६—दो इन्द्रिय घाले जीव कौन २ से हैं ?
- ७—पशु गति में प्रायः कौन जीव जाते हैं ?
- ८—मनुष्य गति में कौन से जीव जाते हैं ?
- ९—जुँ कितनी इन्द्रियों घाला जीव है ?
- १०—जोक में कितनी इन्द्रिय हैं ?
- ११—अणुकाय का क्या अर्थ है ?



४०-सत्य मनोयोग १ असत्यमनोयोग २ मिथ मनोयोग
 ३ व्यवहार मनोयोग ४ सत्य भाषा ५ असत्य
 भाषा ६ मिथ भाषा ७ व्यवहार भाषा ८ औदा-
 रिक ९ औदारिक मिथ १० वैक्रियक ११ वैक्रिय
 मिथ १२ आहारिक १३ आहारिक मिथ १४
 कर्मण १५ ।

प्र०-उपयोग किसे कहते हैं ?

उ०-ज्ञानादि में आत्मा का उपयुक्त होना

प्र०-उपयोग कितने हैं ?

उ०-बारह १२ ।

प्र०-उनके नाम बताओ !

उ०-पांच ज्ञान, तीनो अज्ञान, चार दर्शन हैं-जैसे कि
 मतिज्ञान १, धुनज्ञान २, अवधिज्ञान ३, मनपर्यव
 ज्ञान ४, केवलज्ञान ५, मति अज्ञान ६, धुत अज्ञान
 ७, विभंग ज्ञान ८, बहुदर्शन ९, अचक्षुर्दर्शन
 १०, अवधि दर्शन ११, केवल ज्ञान १२ ।

प्र०-कर्म किसे कहते हैं ?

उ०-जो किय जाय तथा प्राना क. माय मूलम
 परमाणुओं का सम्बन्ध हो जाना ।

१०-जादू करने किसे कहते हैं ?

२०-जिन् करने से होत अन्धों जादू को बाँधता है तथा
नरक, विष, मनुष्य और देवता को जादू जिन्
करे से बचाए की जाती है ।

३०-माँत्र करने किसे कहते हैं ?

४०-जिन् करने से होत अन्ध और मोह जन्मों को बराम
करता है ।

५०-अंगार करने किसे कहते हैं ?

६०-जिन् करने से फल से कर्मों ने अनेक विन्न
उत्पन्न हो जाते हैं ।

७०-अंगु का नाम न राता और बिन्दुके बिन्दु की
अंश है लक्ष्मी न बिन्दु पर जिन् करने का
फल है ।

८०-अंगार करने का ।

९०-अंगार करने का दूसरा नाम कौन्ता है ।

१००-जिन् करने अर्थात् जिन् ।

पांचवां पाठ.

भली वाणी ।

प्र०—बालको ! तुम्हें माता पिता और बड़ों के साथ कैसे बोलना चाहिए ?

उ०—हमें माता पिता और बड़ों के साथ “ जी ” करके बोलना चाहिए ।

प्र०—छोटे भाई और बहनों के साथ किस तरह बोलना चाहिये ।

उ०—उनके साथ प्यार से मीठा वचन बोलना चाहिये ।

प्र०—मीठा बोलने से क्या लाभ है ?

उ०—मीठा बोलने से माता पिता और बड़े लोग प्यार करते हैं मित्र आदर करते हैं ।

प्र०—बुरे बालक कौन हैं ?

उ०—जो गालियां निकाटें हैं वह बुरे बालक होते हैं ।

प्र०—गाली देने में क्या बुराई है ?

धरम के सामने सब हेच, राज और पाट दुनियां का ।
 धरम ही सार है जग में, धरम सब से अमोलक है ॥२॥
 धरम के वास्ते सीता किया परवेश अगनी में ।
 राम तज राज बन पहुंचे, धरम सब से अमोलक है ॥३॥
 धरम के वास्ते गर जान भी जाए तो दे दीजे ।
 नम्र लीजे यकी कीजे, धरम सब से अमोलक है ॥४॥

भजन ३

हाथ ने कलजुग के दामन को छुड़ाना चाहिये ।
 धरम में जिनराज के मन को लगाना चाहिये—टेक
 भाई भाई में नहीं झगड़ा उठाना चाहिये ।
 लड़ झगड़ करके अदालत में न जाना चाहिये ॥ १ ॥
 बाप मां को गालियां देते हो करते हो गजब ।
 धरम का भी तो तुम्हें कुछ खौफ खाना चाहिये ॥ २ ॥
 पद करमे को छोड़ कर, शतरंज जुवा खेलते ।
 इस नम्र पे आपके आंनू बहाना चाहिये ॥ ३ ॥
 गंडा भट्टों को नचाकर, किम लिये खोते हो धन ।
 व्यर्थ व्यर्थ को छोड़ कर, कालिज बनाना चाहिये ॥४॥
 न्याय कलजुग चला आता है जल्दी ने हमें ।
 माना पिता गुरु देव की, सेवा भी करनी चाहिये ॥ ४ ॥

श्रीवर्द्धमानायनमः ।

जैन धर्म शिक्षावली ।

तीसरा भाग

लेखक

उपाध्याय जैनमुनि आत्मारामजी

महाराज

प्रकाशक—

शिवप्रसाद अमरनाथ जैन

अम्बाला शहर ।

एडुकेणल प्रिण्टिङ्ग प्रेस, बाराहौर ।

कार्तिक सं० १९७८ वि०

श्रीजैनधर्म की जय !

श्रीमहावीर स्वामी की जय !

* जैनधर्म शिक्षावली *

* तीसरा भाग *

प्रथम पाठ ।

सूत्रों के विषय ।

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे ।

मिच्ची मे सव्व भूणसु, वेरं मज्झं न केणई ॥१॥

अर्थ—[खामेमि] मैं क्षमापण करना हूं, [सव्वे] सर्व [जीवा] जीवों को [सव्वे] हे सब [जीवा] जीवों ! [खमंतु मे] मेरे पर भी तुम क्षमा करो. क्योंकि [मिच्ची] मैत्री भाव है [मे] मेरा [सव्व] सब [भूणसु] जीवों में अहितु [वेरं] वैर भाव [मज्झं] मध्यम [न केणई] किसी जीव के साथ भी नहीं है ।

भावार्थ—यें सब जीवों में समा की प्रार्थना कर रहे हैं और, हे सब जीवों ! तुम भी मेरे पर समा करो, क्योंकि मेरी मित्रता सब जीवों से है. किन्तु मेरा वैर भाव किसी भी जीव के साथ नहीं है ।

प्रश्न-यह सुन्दर पाठ किस स्थान का है ?

उत्तर-जैन सूत्रों का ।

प्र०-कौन से जैन सूत्र में यह पाठ आया है ?

उ०-आवश्यक सूत्र में ।

प्र०-आवश्यक सूत्र का क्या अर्थ है ?

उ०--जिस सूत्र के पाठ अवश्यमेव पढ़े जाएं अर्थात् जिन पाठों को साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका दोनों समय अवश्य पढ़ते हैं ।

प्र०-आवश्यक सूत्र के सारे कितने अध्याय हैं ?

उ०-छे ६ ।

प्र०-उनके नाम क्या २ हैं ?

उ०--१ सामायिक. २ चतुर्विंशति. ३ वन्दना, ४ प्रतिकल्प, ५ कायोन्मर्ग और ६ प्रत्याख्यान ।

प्र०-जैन सूत्र कितने हैं ?

उ०- आज कल वृत्तीय जैन

प्र०—क्या जैनी बत्तीस ही जैन सूत्र मानते हैं ?

उ०—प्रामाणिक बत्तीस ही जैन सूत्र माने जाते हैं किन्तु जो और सूत्र वा ग्रन्थ हैं उनके पाठ जो २ बत्तीस सूत्रों से प्रतिकूल नहीं हैं, वह भी मानने योग्य हैं।

प्र०—बत्तीस सूत्र ही क्यों प्रामाणिक हैं और क्यों नहीं ?

उ०—यह सूत्र आप्त प्रणीत (सर्वज्ञोक्त) हैं परस्पर विरुद्ध भावों के उपदेष्टा नहीं हैं इन में वयार्थ और बुद्धि भंग्यदित भावों का विस्तार पूर्वक कथन किया गया है, अपितु इतना ही नहीं किन्तु युक्ति संगत कथन हैं।

प्र०—बत्तीस सूत्र किस प्रकार से गिने जाते हैं ?

उ०—अंग सूत्र, उपाङ्ग सूत्र, मूल सूत्र, छेद सूत्र, और आवश्यक सूत्र।

प्र०—अङ्ग सूत्र कितने हैं ?

उ०—द्वादश (बारह) १२।

प्र०—उनके नाम बताओ :

उ०—आचारङ्ग सूत्र १, मृगगङ्गा सूत्र २, व्यानाङ्ग सूत्र ३, नमस्त्रायाङ्ग सूत्र ४, विवर्त प्रज्ञप्ति सूत्र ५, ज्ञानार्थ-कथाङ्ग सूत्र ६, उपनिषद्शङ्ख सूत्र ७, अनाद सूत्र ८, अनुसरोपपन्निक सूत्र ९, पञ्च व्यकरण सूत्र १०, विपाक सूत्र ११, अंग दृष्टि दङ्ग सूत्र १२।

प्र०—उपाङ्ग मूत्र कितने हैं ?

उ०—बारह १२।

प्र०—उनके नाम बताओ ?

उ०—उबवाई मूत्र १ राजपश्रीय मूत्र २ जीवाभिगम मूत्र
पद्मवणा मूत्र ४ जंबुद्वीप पद्मती ५ चन्द्र पद्मती
मूत्र पद्मती ७ निगबलिका ८ कण्ड वदिसदा
पुष्पिका ९ पुष्क चुनिया ११ कण्ठी दिमा १२

प्र०—मूल मूत्र कितने हैं ?

उ०—चार ४।

प्र०—उनके नाम गुनाओ ?

उ०—दशवैकालिक मूत्र १ उत्तराध्ययन मूत्र २ नंदी मूत्र
अनुयोग द्वार मूत्र ४।

प्र०—उद् मूत्र कितने हैं ?

उ०—चार ४।

प्र०—उनके नाम भी बताओ ?

उ०—निर्गम मूत्र १ दशाधन्यक मूत्र २ हरमुहनी मूत्र
अवरोध मूत्र ४

प्र०—उक्त वर्ण, म मूत्रों में ना पाये गये मूत्र का नाम नहीं
है तो क्या इस मूत्र का प्रयोग गिनत है ?

उ०-नहीं, किन्तु आज कल बारह अंगसूत्रों में जो बारहवां दृष्टिवादाङ्ग सूत्र है वह नहीं है इसलिए आवश्यक सूत्र को मिलाकर ही ३२ सूत्र गिने जाते हैं ।

प्र०-सूत्र शब्द का मुख्य क्या अर्थ है ?

उ०-जो सूचना करे, और असर स्तोक[थोड़े] तथा अर्थ बहुत हों तथा अर्थ को सीधे उसे ही सूत्र कहते हैं ।

प्र०-अनुयोग किसे कहते हैं ?

उ०-सूत्र के साथ अर्थ की योजना करनी तथा सूत्र की विस्तार पूर्वक व्याख्या उसी का नाम अनुयोग है ।

प्र०-अनुयोग कितने प्रकार से कहे गए हैं ?

उ०-चार प्रकार से ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-चरण करणानुयोग १ धर्मानुयोग २ गणितानुयोग ३ द्रव्यानुयोग ४ ।

प्र०-चरण करणानुयोग के सूत्र कौन २ में हैं ?

उ०-कालिक सूत्र, जैसे आचारागादि

प्र०-धर्मानुयोग के सूत्र कौन २ में हैं ?

उ०-कृपिभाषित आदि सूत्र, जैसे उत्तराध्यायनादि

प्र०-गणितानुयोग के सूत्र कौन २ में हैं ?

उ०—सूर्य मङ्गल और चन्द्र मङ्गल आदि ।

प्र०—द्रव्यानुयोग के सूत्र कौन २ से हैं ?

उ०—जिन में पद द्रव्यों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है जैसे दृष्टिवादाह मृत्रादि ।

प्र०—इन सूत्रों में एकान्तवाद का वर्णन है या कि अनेकान्तवाद का कथन है ?

उ०—इन सूत्रों में अनेकान्तवाद स्वीकार किया गया है और एकान्तवाद का खंडन किया गया है ।

प्र०—एकान्तवाद और अनेकान्तवाद का क्या अर्थ है ?

उ०—एकान्तवाद वस्तु को ऐसे ही मानता है और अनेकान्तवाद ऐसे भी है इस प्रकार में मानता है ।

प्र०—इस में कोई दृष्टान्त दो ?

उ०—जैसे पड़ा निग्य भी है और अनिग्य भी है पुटछ टुप्प निग्य है, सो चार्य रूप पट है वह अनिग्य है ।

प्र०—क्या अनेकान्तवाद ब्रह्मों में भी लागू जाता है ?

उ०—वेसा कोई भी ब्रह्मों में है जिन में अनेकान्तवाद न लागता है। इसीलिए ब्रह्मों में भी अनेकान्तवाद लाग जाता है ।

प्र०—इस पर कोई दृष्टान्त दो ?

उ०-पुरुष चार प्रकार के होते हैं जैसे कि एक मिलने में तो भद्र हैं परन्तु सदैव पास रहने से फिर भद्र नहीं हैं एक पास रहने में तो भद्र हैं किन्तु पहिले मिलने में भद्र नहीं हैं २ एक मिलने में भी भद्र और पास रहने से भी भद्र ३ एक न तो मिलने में भद्र और न पास रहने में भद्र ४ ।

प्र०-इन में श्रेष्ठ कौन २ से हैं ?

उ०-दूसरे और तीसरे अंक के पुरुष तो अच्छे हैं किन्तु पहिले और चौथे अंक के पुरुष अच्छे नहीं हैं ।

प्र०-क्या सर्व पुरुष अच्छे नहीं होते हैं ?

उ०-नहीं, क्योंकि पुरुष चार प्रकार के होते हैं ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-एक देखने में ऊपर से तो अच्छे होते हैं किन्तु अभ्यन्तर से कठोर हैं १ एक भीतर से सकोमल हैं परन्तु ऊपर से कठिन हैं २ एक ऊपर से और भीतर से सकोमल हैं ३ एक ऊपर और भीतर से कठोर हैं ४ ।

प्र०-क्या फल भी चार प्रकार के होते हैं ?

उ०-हाँ ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

७०-छुहारा, बादाम, दाख, और सुपारी, इसी
ऊपर कहे हुए पुरुष भी हैं ।

प्रश्नावली ।

- १-आध्यात्मिक सूत्र के कितने भाष्य हैं और उनके नाम क्या हैं ?
- २-बत्तीस सूत्रों के नाम बताओ ?
- ३-उपाङ्ग सूत्र कितने हैं ?
- ४-छेद सूत्र कौन २ से हैं ?
- ५-मुख सूत्रों के नाम सुनाओ ?
- ६-अनुयोग कितने हैं ?
- ७-पुरुष कितने प्रकार के होते हैं ?
- ८-अनेकान्तवाद का क्या अर्थ है ?
- ९-सूत्र शब्द का क्या अर्थ है ?
- १०-आध्यात्मिक सूत्र का अर्थ क्या है ?

द्वितीय पाठ

वत्तीस सूत्रों के समास विषय ।

- ५०-आचारङ्ग मूत्र में किस वस्तु का विस्तार किया गया है?
- ६०-सदाचार विषय का भली भाँति से विस्तार किया है और इसी विषय को प्रबल युक्तियों से सिद्ध किया है कि सदाचार ही पुरुषों का भूषण है इसी से ज्ञानादि की सफलता होता है इत्यादि ।
- १०-सूयगढाङ्ग मूत्र में क्या वर्णन है ?
- ३०-जैन धन वा अन्यधन के निद्वन्द्व बड़ी युक्ति से दिखलाए गए हैं और युक्ति पूर्वक उनकी समा-लोचना भी की गई है अन्न मे अनकान्त [जैन] वाद को सर्वान्कृष्ट बनलाया गया है ।
- ५०-स्थानाङ्ग मूत्र में किस वस्तु का विस्तार किया गया है?
- ३०-एक अङ्क से लेकर दश अङ्कों पर्यन्त सब पदार्थों का वर्णन कर दिया है जैसे कि आत्मा एक है ।

और अजीब दो द्रव्य हैं। सी पुदप नरुसक
मीनो बंद हैं चारों गतिपें हैं पांच मराना है
काय है सप्तम्यर अष्टवचन विमक्तिपें मयप्रपण
की गुमिपें, दश प्रकार के सुख इस प्रकार हैं
पदार्थ की युक्ति पूर्वक व्याख्या की गति है और
इसमें मिद्धान्न और उपदेश तो बूढ़ कुढ़ का
हुआ है।

प्र० सप्तम्याच्या मू० पे कदा वर्णन हे ?

उ० इसमें संस्था के कर्म में वरार्यों का वर्गन किया ।
कर्म में सीधे कुनो लक्ष्य करियों का वास्तुस्थिति
का भी वर्णन किया गया है ।

ସଂ. ଏକବର୍ଣ୍ଣା 'ନିଦାହ' ସମ୍ପ୍ରାନ୍ତି । ମୁହଁ ଦେ ବସା ଅଧିକାର
କାମା ଦେ ?

[illegible]

सब पढ़ने योग्य हैं पदार्थ विद्या के अनुसार
प्रश्नोत्तर हैं ।

५०-ज्ञाताधर्मकपाङ्ग मूत्र में किन विषयों का अधिकार
है ?

उ०-इस मूत्र में बड़े उत्तम शिक्षापद धर्मात्मा पुरुषों के
दृष्टान्तों द्वारा भव्य जीवों के शिक्षित बनाने की
चेष्टा की गई है, इस से यह दृष्टान्त बड़े रमणीय
युक्ति सङ्गत हर एक प्राणी के मनन करने योग्य हैं

५१-उपासक दशाङ्ग मूत्र में क्या अधिकार है ?

उ०-श्रावक धर्म बड़ी उत्तम रीति से वर्णन किया गया
है इतना ही नहीं किन्तु गृहस्थों के कर्तव्य और उन
के कर्णीय कार्यों का भली प्रकार से दिग्दर्शन कराया
गया है ।

५२-अंतगड मूत्र में क्या वर्णन है ?

उ० जो आन्ध्रार् अन्न नश्य पोष पधारे हैं उनके जीवन
चरित्र दिग्बलाण गए हैं

५३-अनुत्तगोरपानिक मूत्र में किस का अधिकार किया
गया है ?

उ०-जो आत्माएँ अनुचरविषानों में उत्पन्न हुई हैं उनों
जीवन चरित्र दिखलाए गए हैं ।

प्र०-मन्त्र व्याकरण मूल में क्या अधिकार है ?

उ०-इस मूल में अहिंसा, झूठ, चोरी, अग्रसवर्ग का
परिग्रह के विषय में बड़े उत्तम व्याख्यान दि
गए हैं और उनके इहलौकिक पारलौकिक हा
भी दिखलाए गए हैं, साथ ही अहिंसा, सत्य
अचौर्यकर्म, अग्रसवर्ग और अपरिग्रह की व्याख्या
बड़ी ही सुन्दर रीति से की गई है इस शिष्ट व
मन्त्र मन्त्रेक सिद्धांत के पढ़ने योग्य है ।

प्र०-विवाह मन्त्र में क्या अधिकार है ?

उ०-इस मन्त्र में कर्मों के कर्मों का अधिकार दिखला
गया है और साथ ही न्याय और अन्याय का क
बड़ी सुन्दर रीति से वर्णन किया गया है ।

प्र०-दृष्टिवाद मन्त्र में क्या वर्णन है ?

उ०-जीवदृष्ट्य और अजीव दृष्ट्य की पहली व्याख्या क
गई है जैसा कि ११ वां विषय नहीं है जो इसके
अन्तर्गत है ।

१ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११ ११

२०-आत्मा किस प्रकार से और किन २ कर्मों से यो-
नियों (भवान्तर) में उत्पन्न होता है उनका और
मत्तङ्गवशात् भगवान् महावीर स्वामी और कुणिक
महाराजा की भक्ति का भी दिग्दर्शन कराया गया है
इवना ही नहीं किंतु राजनीति का भी वर्णन भली
प्रकार से दिया गया है साथ ही उस समय के भारत
का रमणीय चित्र भी खींचा गया है जिससे प्रतीत
होता है कि हमारे पूर्वजों का समय कैसा
सुखमय और स्वतन्त्रता का था और शिल्पकला
कैसी उन्नत थी। भारत के अङ्गदेश की मुख्य
राजधानी चंपानगरी कैसी उन्नति के शिखर पर
पहुंची हुई थी और मुनि ऋषि भी अपने कर्तव्यों
को बड़ी उत्तम रीति से पालन करते थे राजा और
प्रजा में संप और परस्पर पिता पुत्र के सम्बन्ध ने
नीति अपना काम करती थी।

१०-राजपक्षी य मन्त्र मे क्या अधिकार है :

४- महागजः प्रवेशे कं जातिरस्य मम सख्योपेत्य न प्रभुः
यत्र है जो भी केभी कुलन अथवा के सख्य वना न
के प्रभोजन भिन्न ज पुरि सं से जो न र के को सख्य

के हैं और साथ ही महा विमान सुरिभाष का वर्णन किया गया है ।

प्र०—जीवाभिगम मंत्र में क्या वर्णन है ?

उ०—जीव और अजीव का अच्छी भाँति से बोध करा गया है साथ ही रुद्रों और द्रौपों का भी वर्ण दिया है ।

प्र०—पञ्चवणा मंत्र में क्या वर्णन है ?

उ०—इस में बड़ा ही सूक्ष्म ज्ञान का वर्णन किया गया और कर्म प्रकृतियों का तां बड़ा ही अद्भुत वर्णन इस का वक्ता पूर्ण तत्त्वों का वेदा हो जाता है ।

प्र०—सम्बुद्धीय मन्त्र में क्या वर्णन है ?

उ०—सम्बुद्धीय का विस्तार पूर्वक वर्णन है और वह मानव स्रष्ट के देशों का भी वर्णन किया गया साथ ही मानव स्रष्ट की दिग्विजय का भी वर्णन किया हुआ है इस के पढ़ने में जैन भूगोल का बड़ा बोध हो जाता है ।

प्र०—चन्द्रवज्राय मंत्र में क्या वर्णन है ?

उ०—इस मंत्र का मुख्य अन्त चन्द्रमा का वर्णन है ।

इस मंत्र के अन्त में चन्द्रमा का वर्णन किया गया है ।

प्र०-सूर्य प्रज्ञप्ति में क्या अधिकार है ?

उ०-इस में सूर्य का अधिकार है और संपूर्ण ज्योतिषियों वा ग्रहादि का विस्तार किया गया है यह दोनों मूत्र खगोल विद्या के गिने जाते हैं इस में आकाश सम्बन्धि चमत्कारों का बड़ा ही अद्भुत वर्णन किया गया है जो इन को पढ़ते हैं वे दैवज्ञ कहे जाते हैं प्रसंगवशात् फलादेश वा गणित विद्या के तो यह दोनों मुख्य शास्त्र हैं ।

प्र०-निरावलिका मूत्र में क्या वर्णन है ?

उ०-महाराजा कुणिक के महासंग्राम का वर्णन किया गया है जिस में कालिकुमारादि दशों भाई काम आए हैं, संग्राम नीति और उम का परिणाम इस मूत्र में दिखलाया गया है जो आन्माएं कल देव-लोको में उत्पन्न हुए हैं उन की व्याख्या की गई है

प्र०-शुक्लिया चूलिया मूत्र में क्या वर्णन है ?

उ०-इस में भी देवलोक में गए हुए जीवों का वर्णन है श्री देवी आदि देवियों का विस्तार पृथक् कथन किया गया है ।

प्र०-शुक्लिया मूत्र में क्या वर्णन है ?

उ०-शुक आदि ऋषी की उत्पत्ति का वर्णन और उनमें
पिछले जन्म का भी दिग्दर्शन कराया गया है ।

म०-वशिष्टदिमा मूत्र में क्या वर्णन है ?

उ०-इस मूत्र में बलदेव के पुत्रों का वर्णन किया गया
है जो श्री अरिष्टनेमि भगवान् के पास दीक्षित होकर
देवलोको में गए हैं ।

म०-नर्गीय मूत्र में किस विषय के अधिकार का क्या
किया गया है ?

उ०-ज्ञान दर्शन और चारित्र्य में जो दोष छगते हैं वे
की शुद्धि के लिए विस्तार पूर्वक मायाधिन की नि-
का विधान किया है और वह विधि सदैव का
उपादेय है युक्ति संगत और आत्म दमन का सु-
उपाय है यह मूत्र नेताओं को कंडस्थ रखने योग्य

म०-दशाश्वत स्कन्ध मूत्र में क्या विषय है ?

उ०-इस में उभय लोको नितावद (गुणवद) विज्ञा-
का वर्णन किया गया है जो कवेक मासी के कंड-
स्थ रहता है और कवेक मासी के वर्णन इस मूत्र
किया है

म०-इस मूत्र में क्या वर्णन है ?

०-साधु साध्वी के पूर्ण आचार का वर्णन इस मूत्र में दिखलाया गया है ।

०-स्पर्शार मूत्र में क्या अधिकार है ?

०-साधु की क्रियाओं का विस्तार पूर्वक कथन किया गया है और साथ ही आचार्य, उपाध्याय, गणि, गणा-
बन्धेदक, भवर्चक, स्थविर आदि पदवियों का वर्णन
और इन के कर्तव्य भी दिखलाए गए हैं. आर्यापों
का भी विस्तार पूर्वक कथन किया गया है, शास्त्रा-
भ्यसन विधि वा तप विधि का भी दिग्दर्शन करा
दिया है पर मूत्र भी मुख्य २ नेताओं के कष्टस्थ
करने योग्य है ।

०-दूरकालिक मूत्र में क्या वर्णन है ?

०-न्यय धेनि के नर दीक्षित मुनि का आचार यही
योग्यता के साथ वर्णन किया है निम्न सभी को
हिम विधि में पावन करना चाहिए इन विषय में
उपदेश विस्तार पूर्वक दिखलाया हुआ है. यद्यपि
यह मूत्र आज कल मरने में ही का हिम जन्मा है
किन्तु इस में शिक्षा देने में यत्न किया है. इस
का सब कष्ट मुनि के नर दीक्षित मुनि का
कर्म है

प्र०-उत्तराध्ययन सूत्र में क्या वर्णन है ?

उ०-इस सूत्र में, जैन सिद्धान्त, उपदेश और इतिहास यह तीनों विषय दिखलाए गए हैं ऐसा कोई विषय छेप नहीं रहा जो इस सूत्र में सूत्र का न कथन किया हो और स्तोक [योदे] वर्णों का अर्थ इसमें प्रतिपादन किया हुआ है यह सूत्र का माणी के कण्ठस्थ करने योग्य है इसके ऊपर के आचार्यों ने संस्कृत टीकाएं लिखी हैं जो पाँच तो सुवसिद्ध हैं किन्तु सुनने में १६ टीकाएं आती

प्र०-नन्दी सूत्र में क्या अधिकार है ?

उ०-पानि ज्ञान, धृत ज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपूर्वक और केवल ज्ञान, इन पाँचों ज्ञानों का निःपूर्वक कथन किया हुआ है अनेक उदाहरणों से इन की भिद्धि की गई है यह जैन न्याय सूत्रों में सुवसिद्ध है ।

प्र०-अनुयागशास्त्र सूत्र में क्या वर्णन है ?

उ०-अनुयाग शास्त्र सूत्र में जैन धर्म के विभिन्न विषयों का वर्णन किया गया है। अनुयाग विषय, नाना

तृतीय पाठ

त्रस और स्थावर विषय ।

प्र०—त्रस कितने प्रकार से वर्णन किए गए हैं ?

उ०—चार प्रकार से ।

प्र०—वे कौन २ से हैं ?

उ०—दो इन्द्रिय वाले जीव १, तीन इन्द्रिय वाले जीव २, चार इन्द्रिय वाले जीव ३, और पांच इन्द्रिय वाले जीव ४ ।

प्र० पांच इन्द्रियों वाले जीव कौनसे हैं ?

उ०—नारकीय, पशु, मनुष्य और देव ।

प्र०—नारकीय जीव कहाँ पर हैं ?

उ०—इस पृथ्वी के नीचे सात नरकों है उनमें जं रहते हैं वे नारकीय हैं और बड़े ही दुःखी ।

प्र०—नरकों में कौन जाते हैं ?

उ०—पाप कर्म करनेवाले (बुरा काम करने वाले)

प्र०-पाँच इन्द्रिय वाले पशु कितने प्रकार से वर्णन किए गए हैं, और वे कौन २ से हैं ?

उ०-तीन प्रकार से, जैसे जलचर-मत्स्यादि, स्थलचर-गोआदि, खचर-पक्षी आदि पक्षी ।

प्र०-मनुष्य कितने प्रकार से कटे गए हैं ?

उ०-दो प्रकार से, जैसे कि आर्य और अनार्य ।

प्र०-आर्य किसे कहते हैं ?

उ०-जो धृष्ट, विद्वान् और दयालु मनुष्य हो ।

प्र०-अनार्य किसे कहते हैं ?

उ०-जो दया में रहित हो, (निर्दयी) ।

प्र०-देव कितने प्रकार के हैं ?

उ०-चार प्रकार के ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-महान् पति, दानवन्तर, स्योतिषी, और वैशानिक ।

प्र०-व्याधर और कितने प्रकार के हैं ?

उ०-पाँच प्रकार के ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-विहीन ३ व, पाली ६ व, अह ४ व, अह ४ व, अह ४ व

३ व, अह ४ व और अह ४ व ३ व

प्र०—मिट्टी में, पानी में, अग्नि में, वायु में, कितने जीव हैं ?

उ०—असंख्यात [जो गणना में न आ सकें]

प्र०—वनस्पति में कितने जीव हैं ?

उ०—अनन्त ।

प्र०—वे जीव कौन से हैं जो न तो मृत हैं और न स्यात् ?

उ०—मोक्ष आत्मा, सिद्ध भगवान् ।

प्र०—उन के क्या क्या नाम हैं ?

उ०—अजर, अमर, सिद्ध, मुद्ध, परमेश्वर, परमात्मा, ईश्वर, सर्वेश्वर इत्यादि अनन्त नाम हैं ।

प्र०—अजर, अमर आदि के नाम जपने से हम कौन सा लाभ होता है ?

उ०—चित्त को शान्ति आती है भाव शुद्ध हो जाता है जैसे अग्नि के पास बैठने में शीत दूर हो जाता है वैसे ही भगवान् के आप में पाप (दुःख) दूर होने हैं ।

प्रभावली ।

- १ वस्तु कितने प्रकार के हैं ।
 - २ रसावर कितने प्रकार के हैं ।
 - ३ वस्तु जीवों के नाम बताओ ।
 - ४ रसावरों के नाम बताओ ।
 - ५ भायं किसे कहते हैं ।
 - ६ अनायं किसे कहते हैं ।
 - ७ मोक्ष आत्माओं के क्या २ नाम हैं ।
 - ८ उन के जाप से हम को क्या लाभ होता है ।
-

चतुर्थ पाठ

पच्चीस बोल के थोकड़े के ११वें बोल
से लेकर १३वें बोल तक ।

म०-गुण स्थान किसे कहते हैं ?

उ०-मोह और योग के निमित्त से सम्यग् दर्शन सम्पूर्ण
ज्ञान और सम्यग् चारित्र्य रूप आत्मा के गुणों की
तारतम्य रूप अवस्था विशेष को गुण स्थान कहते हैं ।

म०-गुणस्थान कितने हैं ?

उ०-चौदह १४ ।

म०-उन के नाम क्या २ हैं ?

उ०-१ मिथ्यात्व, २ सासादन (सास्वादन), ३ मिथ, ४ अविरत सम्पर्क दृष्टि, ५ देशविरत (देशव्रती) ६ ममतविरत, (ममादी), ७ अममतविरत, (अममादी), ८ अपूर्व करण, ९ (निवर्तिवादर) अनिवर्तिवादर (अनिर्वृत्तिकरण), १० मूर्ख सम्प्राप, ११ उपशान्तमोहनीय, १२ क्षीणमोहनीय, १३ संयोगी, १४ अयोगी ।

म०—पाँचों इन्द्रियों के विषय कितने हैं ?

उ०—नेवीस २३ ।

म०—ध्रुव-इन्द्रिय के विषय कितने हैं ?

उ०—तीन ।

म०—वे कौन २ से हैं ?

उ०—जीवशब्द १, अजीव शब्द २, और मिश्र शब्द ३ ।

म०—बहुरिन्द्रिय के विषय कितने हैं ?

उ०—पाँच ।

म०—उनके नाम बताओ !

उ०—बाला, नीला, पीला, लाल, सफ़ेद रण ।

म०—प्राण-इन्द्रिय के विषय कितने हैं ?

उ०—दो ।

म०—उनके नाम बताओ !

उ०—सुगन्ध और दुर्गन्ध ।

म०—रस-इन्द्रिय के विषय कितने हैं ?

उ०—पाँच ।

म०—वे कौन ५ से हैं ?

उ०—मीठा, खट्टा, कड़वा, नमक, तैला ।

म०—स्पर्श-इन्द्रिय के विषय कितने हैं ?

६०-१२ धर्म मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-जो धर्म को अधर्म समझता होवे जैसे अहिंसा सत्य, अदत्त, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, रूप धर्मों को अधर्म मानना ।

६०-१३ अधर्म मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-अनार्य धर्मों को धर्म मानना जैसे, जीव हिंसादि धर्मों को धर्म कहना ।

६०-१४ नापु मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-जो गुणों में अलंकृत हैं और ठीक नापु इति को साधन बाले हैं उन्हीं को अनापु मानना ।

६०-१५ अनापु मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-जो हिंसक, दुराचारी, रक्षभिलारी दुराच हैं और अचार्य साधु के भजन करने बाले हैं उन्हीं को नापु मानना वही अनापु मिथ्यात्व होता है ।

६०-१६ जीव मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-अनार्य दक्षिण के जीव को धर्म के समझना वही जीव १००० साल उदरार्थी के भजन बाले १००० मित्र १००० धर्म के भजन बाले ।

६०-१७ अर्ध मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

१०-२२ अविनय मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

१०-जिनेश्वर देव के वचनों का न मानना, तथा देव गुरु और धर्म का अविनय करना वही अविनय मिथ्यात्व होता है ।

१०-२३ आशातना मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

१०-गुरुकी ३३ आशातनाएँ करनी तथा गुरुकी भक्ति आदि का न करना, अपितु गुरु के साथ असम्भ्य व्यवहार करना ।

१०-२४ अक्रिया मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

१०-साधु वा श्रावक की जो क्रियाएँ हैं, उनको न करना अपितु इतना ही नहीं, किन्तु क्रियाओं का निषेध करना ।

१०-२५ अज्ञान मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

१०-जिससे सत्य वस्तु का बोध होजावे ऐसी पवित्र विद्या का निषेध करना और अज्ञानता को ही श्रेष्ठ मानना, अपितु, जो ज्ञान साधन के उपाय हैं । उनका मूलोच्छेदन करना और जो अज्ञान के नाश करने के साधन हैं उनके रक्षा के

उ०-जड़ वस्तुओं में जीव मानना, जैसे-सुका काष्ठ वस्त्र, निर्जीव पत्थर आदि में जीव संज्ञा पारण करना ।

प्र०-१८ मार्ग मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-सत्य मार्ग जैसे ज्ञान, दर्शन और चास्ति और शुद्ध निर्दोष, तप, दया, दान, संतोष समा आदि के मार्ग को बंधन का मार्ग बतलाना और दया दान का निषेध करे ।

प्र०-१९ उन्मार्ग किसे कहते हैं ?

उ०-जो सात व्यसन के सेवन का मार्ग है, उस को मोक्ष का मार्ग बतलाना, तथा काम क्रीडादि के मार्ग की धर्म पक्ष में स्थापना करनी ।

प्र०-२० रूपी मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-रूपवान् पदार्थों को अरूपी मानना । जैसे वायुकाय को शास्त्र में रूपी माना है स्पर्शमान होने से उसी को अरूपी मानना ।

प्र०-२१ अरूपी मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-जो पदार्थ अरूपी है, उन को रूपी मानना जैसे-आत्मा, आकाश, वमोदि पदार्थों को रूपी कह

०-२२ अविनय मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

०-जिनेश्वर देव के वचनों का न मानना, तथा देव गुरु और धर्म का अविनय करना वही अविनय मिथ्यात्व होता है ।

०-२३ आशातना मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

०-गुरुकी ३३ आशातनाएँ करनी तथा गुरुकी भक्ति आदि का न करना, अपितु गुरु के साथ असभ्य व्यवहार करना ।

०-२४ अक्रिया मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

०-साधु वा श्रावक की जो क्रियाएँ हैं, उनको न करना अपितु इतना ही नहीं, किन्तु क्रियाओं का निषेध करना ।

०-२५ अज्ञान मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

०-जिससे सत्य वस्तु का बोध होजावे ऐसी पवित्र विद्या का निषेध करना और अज्ञानता को ही श्रेष्ठ मानना, अपितु, जो ज्ञान साधन के उपाय हैं । उनका मूलोच्छेदन करना और जो अज्ञान के नाश करने के साधन हैं उनके रक्षा के

उ०-जड़ वस्तुओं में जीव मोनना, जैसे-सुका काष्ठ वस्त्र, निर्जीव पत्थर आदि में जीव संज्ञा धारण करना ।

प्र०-१८ मार्ग मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-सत्य मार्ग जैसे ज्ञान, दर्शन और चारित्र्य और शुद्ध निदोष, तप, दया, दान, संतोष, समा आदि के मार्ग को बंधन का मार्ग बनाने और दया दानका निषेध करे ।

प्र०-१९ उन्मार्ग किसे कहते हैं ?

उ०-जो सात व्यसन के सेवन का मार्ग है, उसी को मोक्षका मार्ग बतलाना, तथा काम क्रीड़ादि के मार्ग की धर्म पक्ष में स्थापना करनी ।

प्र०-२० रूपी मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-रूपवान् पदार्थों को अरूपी मानना । जैसे वायुकाय को शास्त्र में रूपी माना है स्पर्शवान् होने से उसी को अरूपी मानना ।

प्र०-२१ अरूपी मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-जो पदार्थ अरूपी है, उन को रूपी मानना । जैसे-आत्मा, आकाश, यमोदि पदार्थों को रूपी कहना

१०-२२ अविनय मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

१०-जिनेश्वर-देव के वचनों का न मानना, तथा देव गुरु और धर्म का अविनय करना वही अविनय मिथ्यात्व होता है ।

१०-२३ आशातना मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

१०-गुरुकी २३ आशातनाएँ करनी तथा गुरुकी भक्ति आदि का न करना, अपितु गुरु के साथ अनभ्य व्यवहार करना ।

१०-२४ अक्रिया मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

१०-साधु वा श्रावक की जो क्रियाएँ हैं, उनकी न करना अपितु इतना ही नहीं, किन्तु क्रियाओं का निषेध करना ।

१०-२५ अज्ञान मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

१०-जिसमें मन्थ वस्तु का बोध हो जावे ऐसी पवित्र विद्या का निषेध करना और अज्ञानता का ही श्रेष्ठ धारणना, अपितु ज्ञान ज्ञान साधन के उपाय है उनके मूल-बोधन करना और ज्ञान अज्ञान के नाश करने के साधन है उनके मूल के

उ०-जड़ वस्तुओं में जीव मानना, जैसे-सुका काष्ठ, वस्त्र, निर्जीव पत्थर आदि में जीव संज्ञा धारण करना ।

प्र०-१८ मार्ग मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-सत्य मार्ग जैसे ज्ञान, दर्शन और चारित्र्य और शुद्ध निर्दोष, तप, दया, दान, तपा आदि के मार्ग को बंधन का मार्ग बतलाने और दया दानका निषेध करे ।

प्र०-१९ उन्मार्ग किसे कहते हैं ?

उ०-जो सात व्यसन के सेवन का मार्ग है, वसी को मोक्षका मार्ग बतलाना, तथा काम क्रीड़ादि के मार्ग की धर्म पक्ष में स्थापना करनी ।

प्र०-२० रूपी मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-रूपवान् पदार्थों को अरूपी मानना । जैसे वायुकाय को शास्त्र में रूपी माना है स्पर्शमान होने से उन्ही को अरूपी मानना ।

प्र०-२१ अरूपी मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

उ०-जो पदार्थ अरूपी है, उन को रूपी मानना । जैसे-आत्मा, आकाश, वमोदि पदार्थों को रूपी करना

१०-२२ आविनय मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-जिनेश्वर देव के वचनों का न मानना, तथा देव गुरु और धर्म का आविनय करना वही आविनय मिथ्यात्व होता है ।

१०-२३ आमातना मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-गुरुकी ३३ आमातनाएँ करनी तथा गुरुकी भक्ति आदि का न करना, अपितु गुरु के साथ अनन्य व्यवहार करना ।

१०-२४ अक्रिया मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-साधु वा श्रावक की जो क्रियाएँ हैं, उनको न करना अपितु इतना ही नहीं, किन्तु क्रियाओं का निषेध करना ।

१०-२५ अज्ञान मिथ्यात्व किसे कहते हैं ?

६०-जिसमें सत्य वस्तु का बांध होजावे ऐसी पवित्र विद्या का निषेध होना और अज्ञानता हो ही श्रेष्ठ होना, अर्थात् जो ज्ञान नाशक हो जाता है । इसका दूसरा नाम होना और जो अज्ञान के नष्ट करने के लिये है । ३-६ १५ ६

प्र०-दो इन्द्रिय वाले जीवों के कितने भेद हैं ?

उ०-दो—२ ।

प्र०-उनके भी नाम बतलाओ ?

उ०-अपर्याप्त १ और पर्याप्त २ ।

प्र०-तीन इन्द्रिय वाले जीवों के कितने भेद हैं ?

उ०-दो—२ ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-अपर्याप्त १ और पर्याप्त २ ।

प्र०-चार इन्द्रिय वाले जीवों के दो भेद कौन २ से हैं ?

उ०-अपर्याप्त १ और पर्याप्त २ ।

प्र०-पांच इन्द्रियों वाले जीवों के चार भेद कौन २ से हैं ?

उ०-संज्ञि १, असंज्ञि २, अपर्याप्त ३, और पर्याप्त ४ ।

प्र०-पर्याप्त अपर्याप्त किसे कहते हैं ?

उ०-आद्यागादि जिस के पृणे हो गये हैं: उसे ही पर्याप्त

कहते हैं: अर्थात् सम्पूणे वस्तु का नाम पर्याप्त है

और अपृणे का नाम अपर्याप्त है ।

प्र०-संज्ञि और असंज्ञि किसे कहते हैं ?

उ०-जो मन वाले जीव हैं, उनको संज्ञि कहते हैं, जिन

के मन नहीं हैं, उनको असंज्ञि कहते हैं पाच स्थावर

उ०-दो ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-मूक्ष्म और चादर (स्थूल) ।

प्र०-मूक्ष्म जीव किसे कहते हैं ?

उ०-मूक्ष्म नाम कर्म के उदय से जो मूक्ष्म शरीर का जीव है, उन्हें ही मूक्ष्म कहते हैं; वे आत्माएं मछोंक में व्याप्त हैं अपनी आपु के आने बाद होते हैं, केवल ज्ञानी उन को देखते हैं ।

प्र०-चादर जीव किसे कहते हैं ?

उ०-जैसे पांच व्याकरण चादर नाम कर्म के उदय में शरीर के घटने वाले हैं, दृष्टिगोचर होते हैं, वे वा सुख के अनुभव करते हुए भी हमें ज्ञाने । व्यवहार तब के माते में जाते हैं, अनुरक्त प्रतिफल भी हो जाते हैं अपने कर्मोदय से में प्रवेश करते हैं ।

प्र०-मूक्ष्म के चिह्न किसे हैं ?

उ०-नाम

प्र०-चादर के चिह्न किसे हैं ?

उ०-नाम ३ बार प्रयोग ।

प्र०-दो इन्द्रिय वाले जीवों के कितने भेद हैं ?

उ०-दो—२ ।

प्र०-उनके भी नाम बतलाओ ?

उ०-अपर्याप्त १ और पर्याप्त २ ।

प्र०-तीन इन्द्रिय वाले जीवों के कितने भेद हैं ?

उ०-दो—२ ।

प्र०-वे कौन २ से हैं ?

उ०-अपर्याप्त १ और पर्याप्त २ ।

प्र०-चार इन्द्रिय वाले जीवों के दो भेद कौन २ से हैं ?

उ०-अपर्याप्त १ और पर्याप्त २ ।

प्र०-पांच इन्द्रियों वाले जीवों के चार भेद कौन २ से हैं ?

उ०-संज्ञि १, असंज्ञि २, अपर्याप्त ३, और पर्याप्त ४ ।

प्र०-पर्याप्त अपर्याप्त किसे कहते हैं ?

उ०-आहारादि जिस के पूर्ण हो गये हैं; उसे ही पर्याप्त कहते हैं; अर्थात् सम्पूर्ण वस्तु का नाम पर्याप्त है और अपूर्ण का नाम अपर्याप्त है ।

प्र०-संज्ञि और असंज्ञि किसे कहते हैं ?

उ०-जो मन वाले जीव हैं, उनको संज्ञि कहते हैं, जिन के मन नहीं हैं, उनको असंज्ञि कहते हैं पांच न्याय



छठा पाठ ।

गृहस्थ के गुण विषय ।

चारों आश्रमों का कारण भूत एक गृहस्थाश्रम है। गृहस्थाश्रम की शुद्धि के होने पर ही शेष आश्रम शुद्ध हो सकते हैं । गृहस्थाश्रम-रूपी गाड़ी के चढ़ाने वाले स्त्री और पुरुष यह दोनों वृषभ (बैल) हैं, जब वे सुयोग्य होते हैं, तब पथिक इच्छानुकूल मार्ग पर शीघ्र पहुँच जाता है तथा गाड़ी में बैठने वाले आनन्द पूर्वक अपने नियत स्थान पर पहुँच कर सुख का अनुभव करते हैं । अतएव सिद्ध हुआ कि गृहस्थाश्रम में बसने वाले स्त्री और पुरुष सुयोग्य होने चाहिए क्योंकि शिशित और अशिशित का अन्तर अल्पमेव होता है, जैसे काठ काठ का अन्तर होता है।

॥ श्री ॥ श्री कार ॥ ॥ श्री ॥

गुण का अन्तर अवश्य है, उसी प्रकार स्त्री वा पुरुष का अन्तर है । एक पुरुष वा स्त्री गुणज्ञ, परोपकारी, सत्यवादी, प्रामाण्यवादी, न्याय करने वाले होते हैं । एक अन्यायी, व्यभिचारी होते हैं तो उन्हीं का संसार में प्रसिद्धि आदि गुणों में अवश्यमेव अन्तर पड़ जाता है, जो पदार्थ संसार में अल्प मूल्य वाला होता है, यदि उस को भी शिक्षाओं द्वारा ठीक बिया जाए तो वह भी बहु मूल्य हो जाता है ।

[illegible]



विद्वान्, ३० ब्रह्मज्ञान से रहित, ३१ अपने काम में लगे (लज्ज) का विचार करने वाला, ३२ मन में ईर्ष्या उत्पन्न करने वाला । इन पचीस गुणों से पराशर्यो हस्त्याश्वन योग्य होने से फिर धर्म के से रोग हो जाता है ।

इतिरुच्यते प्राणिनां चोऽन्ये गुणो के धारण करने की आवश्यकता है, इनमें ही परमेश्वर की श्रेष्ठि से रोग आरुह हो जाता है और सदैव काष्ठ इन विचारों की अनेकसे दृष्टि कर देना चाहिए जिस विचार में प्राणी अपने गुणों का नाश कर बैठता है उस लोक में निन्दा परलोक में दुःख भोगता है जो क्या है "इप्स्यं" दूसरों की ईर्ष्या करने में अपने गुणों का नाश इत्यादि अब गुणों की प्राप्ति होती है इतिरुच्यते किमि मे ईप्स्यं नृप कर्मा निन्दा नृप करो हितां का धी निन्दा नृप करो अस्तु होनके दो गौरी के गुणान्तर १ कां उन के मन्त्र और शीत की उत्तरदा दिव्य ५ नृप कि तुम उन के गुण धन करोति तब वा धी तुम्हारे माय मन्त्र बर्दाश्त करें जिस से मेन की परमा अत्यन्त बढ़ि होगी ।

क्योंकि वहाँ पर शान्ति का राज्य है वहाँ पर क्रोध
 का भाव करने का बुद्ध (ज्ञान) जाती है, अपितु
 वहाँ करने वाले को लज्जित होना पड़ता है । जैसेकि-
 किसी नगर के बाहर एक भिक्षु ठहरा हुआ था, उस
 ही शान्ति की परिभाषा नगर में बहुत ही फैल गई संकड़ों
 या नगियों के समूह उन के दर्शन को आते थे और
 इन में रहने के विषय प्राप्त करने थे, फिर उन का
 परीक्षण करने हुए अपने रोगों में चले जाते थे । एक
 दिन की राती है कि किसी पुरुष ने विचार किया कि
 कि शान्ति की शान्ति की सीमा कहाँ तक है, इसलिए
 वह ही परीक्षा करने के लिए, वह उस पुरुष ने उस
 दिन के एक आदम को छोड़ दिया और पुरुष को सोने
 के लिए वह फिर विष्णु शान्ति ने उस का हृदय भी
 कलुषा नष्ट किया । वह वह पुरुष अपने आदम को
 कहा, वह वह वह ही कहा । वह वह पुरुष ने उसे
 कहा कि । वह पुरुष अपने इसी ही को पूरा कर
 दिया है । वह वह वह वह वह पुरुष को ही पूरा
 है ।

18 दृढ़ नहीं होता है और अपनी परम मित्रता का
बदल कर देते हैं। क्योंकि छल करने वाले के
प्रयोग भी मित्रता नहीं करता, यदि किसी को
छल करने को दूर भी दृढ़ जाती है।

१८वीं शताब्दी में शांति नहीं पाते हैं अपितु
 वे के शत्रु हैं क्योंकि-जिस ने छल किया होता
 उसका हृदय बँटता रहता है और उन के मुख में
 ईर्ष्या नहीं निकलती है किन्तु उनकी आत्मा
 भी बँट हो जाती रहता है इस लिए कहे (सावर)
 जो मे शत्रु हो, जोड़ना चाहिए किसी के साथ भी
 नहीं है इसीलिए यह सभी शत्रु न होकर एक ही
 हैं इसीलिए यह सभी शत्रु हैं जोड़नी चाहिए
 क्योंकि यह सभी ही शत्रु हैं, यह सभी के
 शत्रु हैं के लिए जोड़ना चाहिए किन्तु किन्तु
 जोड़ना चाहिए किन्तु किन्तु किन्तु किन्तु
 किन्तु किन्तु किन्तु किन्तु किन्तु किन्तु किन्तु
 किन्तु किन्तु किन्तु किन्तु किन्तु किन्तु किन्तु

आठवां पाठ ।

दया विषय ।

पूरे काष्ठ में इसी भारत वर्ष में एक जगह के बाँझी नगरी बसती थी, जग में अनेक पत्नी संगों । निशाम का और जग नगरी में एक पनशाछा प्राण का भी दुःख था ।

अतितु एक व्यापक के तीन पुत्र थे, और उन तीन बच्चों में आई हुई थी, एक समय उन तीनों माँओं ने अपना हमोई घर (महानमशाछा) की बच्चों को संवाछ दिया, और उनही हमोई घर की बारी बारी एक दिन मर में बड़ी बहू । बारी बारी हमरा नाव का नागरी बसने । हमोई का दाव दम्बा भाग्य दर दिना जब उन हाथ के बहान के जग दहक दुम्बा गीतकिया जग जगद जगद के भाग्य बसाक की हाथ दि बहोई व की बहूदर दग जग जग जग जग ।

श्रीवीतरागायनमः ।

जैन धर्म शिक्षावली ।

चतुर्थ भाग ।

जैनमुनि उपाध्याय आत्मारामजी

दूसरा पाठ ।

थोकड़े का विषय ।

-दण्डक किसे कहते हैं ?

-जिस में जीव दण्ड पाए, अर्थात् सुख वा दुःख का अनुभव करे ।

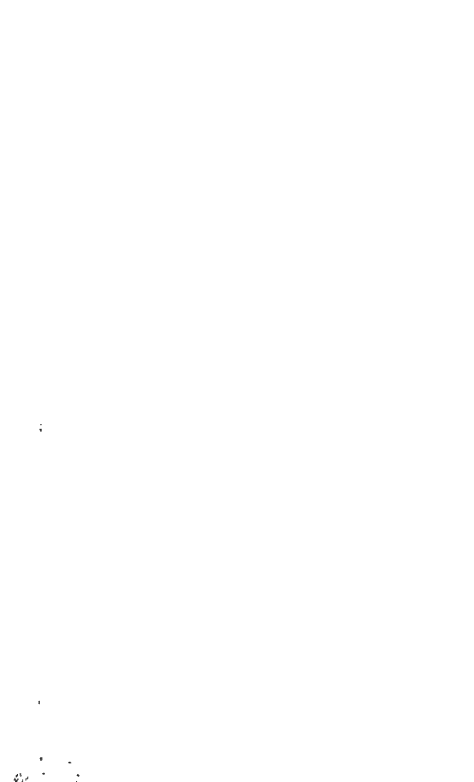
-दण्डक सारे कितने हैं ।

-चौबीस २४ ।

-उन के नाम क्या २ हैं ?

-सानों नरकों का एक दण्डक, दश भवनपतिवों के दश दण्डक, पांच स्यावरों के पांच दण्डक । तीन विक्रमेन्द्रियों के तीन दण्डक । निर्णय पंचेन्द्रिय का एक दण्डक । पतुष्य का एक दण्डक । व्यन्तर का एक दण्डक । ज्योतिषी देवों का एक दण्डक । वैमानिक देवों का एक दण्डक । एवं सब चौबीस दण्डक हुए ।

-दश भवनपतिवों के नाम क्या २ हैं ?



- ६-सक्रिय द्रव्य कितने हैं और अक्रिय द्रव्य कितने हैं ?
 ७-निक्षय में ६ द्रव्य सक्रिय हैं, अपने २ कार्य करते हैं परन्तु हम में जीव और पुटल सक्रिय हैं शेष चारों द्रव्य अक्रिय हैं ।
 ८-कर्त्ता और अकर्त्ता कौन २ से द्रव्य हैं ।
 ९-निक्षय में ६ द्रव्य अपने २ स्वरूप के कर्त्ता हैं, परन्तु हम में जीव द्रव्य कर्त्ता है शेष पांच अकर्त्ता हैं ।
 १०-किस जीव जिमे करते हैं ?
 ११-जो जल में मत्स्यादि रहते हैं ।
 १२-किस जीव जिमे करते हैं ?
 १३-जो भूमि पर पशु आदि फिरते हैं ।
 १४-किस जिमे करते हैं ?
 १५-जो आकाश में पक्षी पक्ष्म हैं ।
 १६-किस जिमे करते हैं ?
 १७-जो जल में वृक्ष व वन्य हैं जैसे जहूँ, कृष्ण ।

तीसरा पाठ ।

श्रावक के पांच अनुव्रत ।

मित्र भद्र पुरुषो ! जैसे हर एक प्राणी को अपने जीवन की इच्छा रहती है, उसी तरह जीवन को बच बनाने की भी इच्छा प्रत्येक प्राणी को होनी चाहिये । जब तुम्हारा जीवन पवित्र हो जाएगा, तब हर एक के लिये तुम आदर्श बन जाओगे और तुम्हारा आचरण ठीक हो जाने पर तुम्हारी भारी संतान अच्छे मार्ग पर आजायगी और तुम संसार में यश के पात्र बनोगे । हर एक के हृदय में तुम्हारा विश्वास पैदा जाएगा । अपितु जब तक तुम्हारा आचरण ठीक न होगा, तब तक तुम अपने स्पर्श वशों को भी शिक्षा का समर्थ न होगे, इतना ही नहीं, किन्तु तुम कष्टों का सामना करना पड़ेगा, फिर तुम

राज्य कर गए हैं । किन्तु यः वैसी की वैसी
 री, इसके लिए अनेक राजाओं के युद्ध भी हुए,
 अनेकों के मरण भी गए, अपितु भूमि यहाँ पर ही
 छाँड़ गए, इस लिए गृहस्थ को भूमि के लिए भी झूठ
 न बोलना चाहिए ।

न्यामापहार भी न करना चाहिए, यदि किसी ने
 तुम्हारे पास बिना साक्षी वा बिना लिखित किए
 कोई वस्तु रख दी हो तो उस के माँगने पर ऐसा
 मत कहो कि, मेरे पास तो वस्तु रखी ही नहीं तुम
 तो मुझे कलंकित करते हो, इस प्रकार से न कहना
 चाहिए ।

झूठी साक्षी भी न देनी चाहिए. जो झूठी साक्षी देते
 हैं वे शूचीर पुरुष नहीं होते औरों के बित्त को भी
 दुःखी करते हैं. धर्म ने गिर जाते हैं, शास्त्रों में झूठी
 साक्षी देने को बड़ा पाप माना गया है, इस लिए किसी
 को भी झूठी साक्षी न देनी चाहिए ।

साथ ही इस नियम के पाच अनिचार बतलाए गए
 हैं. उन को अवश्यमेव छाड़ देना चाहिए वगैरह

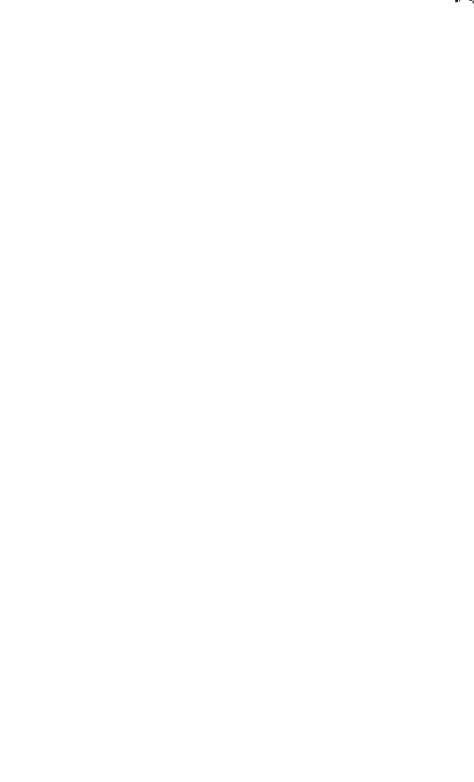
उन के त्याग देने से ही सत्यव्रत रह सकता है। नहीं तो सत्यव्रत कलंकित हो जाएगा।

वह दोष यह है जैसे कि:—

१—बिना विचार वा निर्णय किए किसी को ऐसा न कहना चाहिए कि इस ने अमुक कार्य किया है क्योंकि यह अभ्याख्यान पाप होना है, जिस ने काम न किया हो यदि उस को मूठा कलंक दिया जाए तब उस का आत्मा परम दुःखी हो जाता है इस लिए बिना सोचे मन मायण करो।

२—किसी की गुप्त बातों प्रगट भी नहीं करनी चाहिए क्योंकि—यदि युक्त बातों के प्रगट करने से उस का मरण हो जाता है या वह कोई और ही अकार्य कर बैठता है इस वास्ते किसी बातों को जो प्रसिद्ध नहीं है उस को प्रसिद्ध न करना चाहिए, तथा जो कापवेष्टा के उत्तरण करने वाली बातों हैं उन्हें भी प्रगट न करना चाहिए ना ही परस्पर उपद्रव्य में यह बातें करना चाहिए।

३—अपनी स्त्री की यम युक्त बातों भी न करनी चाहिए क्योंकि ऐसा करने पर अपना ही उपद्रव्य होता है-



३--जब रात्रि ग्याग पूर्वक खड़ा आ रहा है, और
राजा ग्यागशील है, जिन के मतलब में गिर और
बकरी एक घाट पानी पीने हैं । फिर जब राजा है
विरुद्ध काम करना यह बड़ा भारी पाप है । इसलिए
रात्रि विरुद्ध काम न करना चाहिए ।

४--बोछा माया अनुनायिक (कम उपादा) न काम
चाहिए । ऐसा करने में मनीष नहीं करने चाहिए
अर्थात् की मृदि पीछे न कर्मा में नहीं हो सकती, बल्कि
हिमी को वेगी किया मां के करने में करना है
हो, अर्थात् की मां हि भी गई हो । किन्तु जब की
बड़ी हुई अर्थात् मुख्य दम वाली कर्मा भी नहीं होती,
वेमां हिरेकी अंगों न जो व्यापार में उद्योग मन्त्र है
है, इस का मुख्य मुख्य काम नहीं है कि वह अंत
व्यापार में मन्त्र न काम करे । इस कि
व्यापार में अनुनायिक न काम न करे ।

५--बहु मन्त्र बहू न मन्त्र मन्त्र न करे । यह
है न मन्त्र बहू न मन्त्र न करे । यह
है न मन्त्र बहू न मन्त्र न करे । यह

शान्तात्मा जगत् के उद्धार करने वाले ही होते हैं ।

प्र०—क्या सिद्ध भगवन्तो का स्वयं जीवन्मुक्त भा-
व्याओं ने ही बनकाया है ?

उ०—हाँ, भगवन्, भगवन् भाव्याओं का स्वयं जीवन्मुक्त
भाव्याओं ने ही प्रतिपादन किया है ।

प्र०—भगवन् यदि तो बनकाओ जीवन्मुक्त किस प्रकार से
बन सकता है ?

उ०—जब भगवन् सत्यम् दर्शन सत्यम् ज्ञान और सत्यम्
चाञ्चल्य से युक्त होता है, तब उस के क्रोध, मान, पाप
और लोभ का दोष नष्ट होजाने है, फिर राग द्वेष
काम क्रोध आदि जगत् के नष्ट होने से सर्वत्र
और सर्व दृष्टो बन जाता है, सो वही जीवन्मुक्त
है ।

प्र०—क्या जीवन्मुक्त भाव्यान् उद्देश भी करनी है ?

उ०—हाँ, जीवन्मुक्त भगवन् उद्देश भी करनी है ।

प्र०—यह उद्देश किस किस करनी है ?

उ०—यह उद्देश जबतक जगत् का ज्ञान ही करनी है,
वर्गेहि ब्रह्मावर्गेहि मुख्य तब जगत् का ज्ञान
है, है जो जगत् का नष्ट करनी यह भगवन् सर्वत्र

गिर जाती है।

प्र०-चतलाओ, जो योगी आत्मा ध्यान में ही सदा रहते हैं, वह क्या परोपकार करते हैं: क्योंकि वह तो चोछते भी नहीं हैं ?

उ०-योगी आत्मा ने जो योग मुद्रा को धारण किया है और अपने मन पर विजय पा लिया है, जब कोई उन की योग-मुद्रा को देखता है वा विचार करता है, तब उस के भावों में ज्ञान और वैराग्य की उत्पत्ति होने लगती है, फिर वह उन का यथा शक्ति अनुकरण करने लग जाता है, वह सब उन योगियों का ही उपकार है, इसलिए सदाचारी पुरुषों का मटाचार आदर्श-रूप होकर उपकार करता है, वह योगीजन अपनी योग मुद्रा से ही उपकार का मकाने है।

३०-जब राजपुरुषों को चोरी आदि कर्म मालूम हो जाएंगे तब ही उस को पकड़ेंगे, यदि मालूम न हो तो नहीं पकड़ते ।

४०-निमित्त जड़ हैं, वा चेतन ?

३०-जड़ भी और चेतन भी ।

५०-यह कैसे ?

३०-चोरी आदि कर्म तो जड़ निमित्त हैं पुरुषार्थ चोरी करने का और राज पुरुष द्वारा पकड़ने के पुरुषार्थ चेतन निमित्त हैं, इन्हीं द्वारा जीव कर्मों के फल को भोगता है ।

५०-जीव कितने प्रकार के निमित्तों को बांधते हैं, जिन में वह कर्मों के फलों को भोगते हैं ?

३०-जीव चार प्रकार के निमित्तों को बांधते हैं, जैसे कि देवताओं का, मनुष्यों का, पशुओं का, और अपने आत्माओं का ।

५०-अपने आत्मा का निमित्त कैसे होता है ?

३०-जिस में किसी देव-मनुष्य और पशु का निमित्त न होवे वही अपने आत्मा का निमित्त कहाता है ।

८-इसमें प्रमाण क्या है ?

२०-द्रव्य और पर्याय का क्या लक्षण है ?

३०-द्रव्य उसी को कहते हैं, जो अपने पर्याय को प्राप्त होता रहे जैसे पुद्गल द्रव्य तो एक है, किन्तु इस के पर्याय अनेक उत्पन्न हो रहे हैं शुभ पुद्गल में अशुभ बन जाता है अंशुभ से शुभ बनता है, जैसे भोजन से शरीर के रसादि बनते हैं ।

४०-जगत् के पर्याय का कर्त्ता कौन है ?

५०-जड़ और चेतन ।

६०-कर्म कौन करता है ?

७०-कर्म आत्मा मन वचन और काया के द्वारा ही करता है, किन्तु कर्मों के मुख्य कर्त्ता राग द्वेष हैं जब आत्मा में राग और द्वेष का आवेश होता है वही समय जीव के कर्म बन्ध का होता है ।

८०-क्या ईश्वर कर्म नहीं कराता है ?

९०-यदि ईश्वर कर्म कराता तो इसमें दोष उत्पन्न होते, जैसे एक तो जब ईश्वर कर्म कराता है जीव की कर्म करने विषय स्वतन्त्रता नष्ट हुई, दूसरे जब ईश्वर कर्म कराता है तब भोगने वाला भी वही होना चाहिए जैसे किसी ने स्वर्ण से किसी का गन्धा

शिक्षाएं ।

- १—अपने हित और अहित का ध्यान रखो ।
- २—जिस को बुरा समझते हो उस से बचना चाहिए ।
- ३—प्राण जाने हो तो जाने दो परन्तु धर्म न जाए ।
- ४—गुप्त कर्म करने में आलसी मत बनो ।
- ५—अपने किए हुए उपकार को भूल जाना चाहिए ।
- ६—धर्म पुस्तकों को पढ़ते रहो ।
- ७—मर्दा ममानी माना जादि की पूजा न करनी चाहिए ।
- ८—कुत्ते दिर्घा आदि को घड़ाप रोटी के लाठी न मारो ।
- ९—मूर्ति को मूर्ति समझा परन्तु उस को नत्था न टेको ।
- १०—अपने वृद्धों के आचरण किए हुए गुप्त मार्ग पर चलो ।
- ११—जानने वाली बात को अवश्य जानो ।
- १२—छोड़ने वाली बात को छोड़ दो ।
- १३—अङ्गोकार करने वाली बात को अङ्गोकार [ग्रहण] करो ।
- १४—अपने आप का भी ध्यान रखो ।
- १५—विद्वानों से वा सर्व प्रकार के नष्टों से बचो ।

